Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

मा पेह पुरापणामए।

भुक्त-भोगों की ओर मत देखो।

* * *

अभिकंखे उवहिं धूणित्तए।

उपधिमान और कर्म को दूर करने की अभिलाषा करो।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 32 • 15 - 21 मई, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 13-05-2023 • पेज : 16 • ₹ 10

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण के ५०वें दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष का भव्य शुभारंभ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी आचार्यप्रवर के दीक्षा महोत्सव पर भेजा शुभकामना संदेश

संयम जीवन सुरक्षित रहे और इसकी गरिमा रहे अक्षुण्ण : आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का प्रथम मनोनयन दिवस का भी रहा शुभ अवसर

वेसू-सूरत, ४ मई, २०२३

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का ५०वाँ दीक्षा कल्याणक महोत्सव का भव्य शुभारंभ डायमंड नगरी सूरत में समायोजित हुआ। प्रातः ४ बजे से चतुर्विध धर्मसंघ अपने आराध्य को बधाई और शुभकामना संप्रेषित करने के लिए लालायित था। उपस्थिति का आलम यह था कि सिटीलाईट का भवन ४:३० बजे तक खचाखच भर गया।

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी में आयोजित इस महोत्सव में सकल संघ अपने आराध्य को इस महान अवसर पर वर्धापित कर रहा था। युवा शक्ति इस दिन को 'युवा दिवस' के रूप में मनाकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही थी। इस महोत्सव के अवसर पर संपूर्ण भारत के अनेक क्षेत्रों से श्रावक-श्राविका उपस्थित होकर तेरापंथ के महान सूर्य को वर्धापित कर रहे थे।

महावीर समवसरण में ५०वें दीक्षा कल्याणक महोत्सव का शुभारंभ आचार्यप्रवर के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। तेरापंथ श्रावक समाज सूरत से गीत के माध्यम से आचार्यप्रवर को वर्धापित किया।

आज ही के पावन दिन पर पूज्यप्रवर ने मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा जी को सरदारशहर में साध्वी प्रमुखा के पद पर मनोनीत किया था।

अमृत महोत्सव के अवसर पर अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अनंत काल की जीव की यात्रा में वह समय महत्त्वपूर्ण उपलब्धि का होता है, जब जीव को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाती है। और वह समय भी महत्त्वपूर्ण होता है, जब सर्व विरति रूप चारित्र-रत्न की प्राप्ति होती है। फिर वह दिन भी कितना महत्त्वपूर्ण है जब बारहवाँ गुणस्थान प्राप्त हो जाता है। फिर आगे तो सब कुछ अपने आप होने वाला ही है।

हम चारित्रात्माओं ने यह अध्यात्म का पथ स्वीकार किया है। आज वैशाख शुक्ला चतुर्दशी है, मेरा दीक्षा दिवस है। मंचासीन हम सभी ने दीक्षा ली है और सबका अपना-अपना दीक्षा दिवस है। आज मेरी दीक्षा के ४९ वर्ष पूरे हो गए और पचासवें वर्ष का शुभारंभ समारोह मनाया जा रहा है। इसके भीतर भी एक भक्ति-कर्तव्य का भाव दृष्टिगत हो सकता है।

आज मैंने संयम पर्याय के पचासवें वर्ष में प्रवेश किया है। आज के दिन मुनि सुमेरमल जी 'लाडनूं' ने दीक्षा प्रदान की थी। इसकी पृष्ठभूमि में अनेक चारित्रात्माओं की प्रेरणा-उपदेश भी रहा होगा। अभिभावकों का भी आज्ञा देने में सहयोग रहा था। माँ मुझे अच्छे रास्ते पर साथ में ले जाती थी। गुरुदेव तुलसी की आज्ञा प्राप्त हुई और साध्वीप्रमुखा भी उस समय वहाँ विराजित थी।

मैंने कालूगणी की वार्षिक पुण्यतिथि पर शादी नहीं करने और दीक्षा लेने का संकल्प किया था। वो संकल्प आज के दिन ही पूरा हुआ था। मुनि उदित कुमार जी का भी आज ५०वाँ दीक्षा दिवस है। मैं इनको वंदन करते हुए मंगलकामना करता हूँ। संयम पर्याय बढ़े और धर्मसंघ की सेवा करते रहें।

(शेष पृष्ठ २ पर)

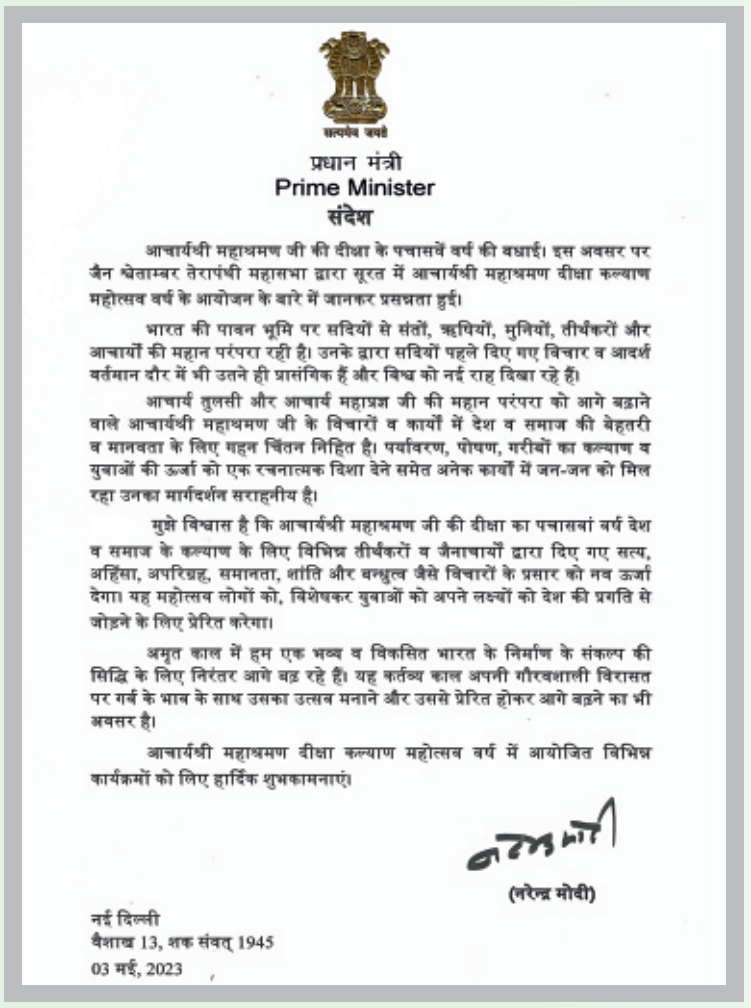

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री

Prime Minister

संदेश

आचार्यश्री महाश्रमण जी की दीक्षा के पचासवें वर्ष की बधाई। इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा सूरत में आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष के आयोजन के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई।

भारत की पावन भूमि पर सदियों से संतों, ऋषियों, मुनियों, तीर्थंकरों और आचार्यों की महान परंपरा रही है। उनके द्वारा सदियों पहले दिए गए विचार व आदर्श वर्तमान दौर में भी उतने ही प्रासंगिक हैं और विश्व को नई राह दिखा रहे हैं।

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी की महान परंपरा को आगे बढ़ाने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी के विचारों व कार्यों में देश व समाज की बेहतरी व मानवता के लिए गहन चिंतन निहित है। पर्यावरण, पोषण, गरीबों का कल्याण व युवाओं की ऊर्जा को एक रचनात्मक दिशा देने समेत अनेक कार्यों में जन-जन को मिल रहा उनका मार्गदर्शन सराहनीय है।

मुझे विश्वास है कि आचार्यश्री महाश्रमण जी की दीक्षा का पचासवां वर्ष देश व समाज के कल्याण के लिए विभिन्न तीर्थंकरों व जैनाचार्यों द्वारा दिए गए सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, समानता, शांति और बन्धुत्व जैसे विचारों के प्रसार को नव ऊर्जा देगा। यह महोत्सव लोगों को, विशेषकर युवाओं को अपने लक्ष्यों को देश की प्रगति से जोड़ने के लिए प्रेरित करेगा।

अमृत काल में हम एक भव्य व विकसित भारत के निर्माण के संकल्प की सिद्धि के लिए निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। यह कर्तव्य काल अपनी गौरवशाली विरासत पर गर्व के भाव के साथ उसका उत्सव मनाने और उससे प्रेरित होकर आगे बढ़ने का भी अवसर है।

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली

वैशाख 13, शक संवत् 1945

03 मई, 2023

युवा दिवस के अवसर पर युवा वाहिनी का लोकार्पण

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अंतर्गत संचालित युवा वाहिनी बस को परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाठ सुनाया।

इस अवसर पर अभातेयुप आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेश कुमार जी एवं मुनि नयकुमार जी की मंगलमय उपस्थिति रही।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने गुरुदेव को बस के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। महामंत्री पवन मांडोत के साथ संपूर्ण अभातेयुप प्रबंधन मंडल एवं बस के प्रायोजकों में बी०सी० आशा देवी जैन, गीता देवी सूरजमल सूर्या, शांतादेवी नानकचंद तनेजा एवं युवा वाहिनी राष्ट्रीय प्रभारी विकास बोथरा व अभातेयुप परिवार की गरिमामय उपस्थिति रही। बस के प्रायोजक के रूप में मधु विमल कटारिया का भी योगदान रहा।

गौरतलब है कि अभातेयुप युवा वाहिनी के अंतर्गत गुरुदेव के रास्ते की सेवा में पधारे समस्त ३५७ परिषदों के युवा साथियों को ठहरने की उत्तम व्यवस्था प्रदान की जाती है। पूर्णतया वातानुकूलित यह बस २२ स्लीपर, २ स्नानघर, २ बाथरूम के साथ एक ड्रेसिंग एरिया सहित अनेक सुविधाओं से युक्त है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 मई, 2023

✦ व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मानुशासन से जीवन को सफल बनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

पलसाना, सूरत ६ मई, २०२३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी सचिन से विहार कर धवल सेना के साथ पलसाना के एस०डी०जे० स्कूल में प्रवास हेतु पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए परमपूज्य ने फरमाया कि हर आदमी सुखी जीवन जीना चाहता है। हर प्राणी सुखी रहना चाहता है।

प्रश्न होता है कि यहाँ भी सुखी और आगे भी सुखी कैसे रहें। शास्त्र में कहा गया है कि आत्मा का दमन करना चाहिए। पर आत्मा का दमन करना मुश्किल काम होता है। आत्मा का दमन करने से परम सुख प्राप्त हो सकता है। जीवन में सुख-सुविधा साधनों से मिल सकती है, परंतु भीतर की परम शांति साधना से प्राप्त हो सकती है।

बाहर की दुनिया में सुखी रहने वाला व्यक्ति भीतर में अशांत रह सकता है। दुखी और चिंतित हो सकता है। भीतर शांति पदार्थों से नहीं मिल सकती, उनमें ये शक्ति नहीं होती है। शक्ति तो अध्यात्म की साधना में होती है। स्वयं का अभिविग्रह करने से दुःख से मुक्ति मिल सकती है। भगवान ने फरमाया है कि प्राणी दुःख से डरता है। इस दुःख को जीव ने ही अपने प्रमाद से पैदा किया है। दुःख से छुटकारा पाने का उपाय है—आत्म दमन व आत्मानुशासन।

राष्ट्र में लोकतंत्र हो या राजतंत्र अनुशासन जरूरी है। कर्तव्य और अनुशासन के बिना लोकतंत्र का देवता मृत्यु और विनाश को प्राप्त हो जाएगा। निज पर शासन, फिर अनुशासन। जो अच्छा शिष्य नहीं बन सकता वो अच्छा गुरु भी नहीं बन सकता। सम्मान दें, सम्मान लें। आत्मानुशासन अध्यात्म के क्षेत्र के अलावा समाज और राजतंत्र में भी महत्त्वपूर्ण है।

मतभेद होना बुरी बात नहीं है, पर वह असौहार्द का कारण न बने। धर्म मुख्य है, संप्रदाय गौण है। राष्ट्र ऊपर है, पार्टी गौण है। समाज बड़ा है, व्यक्ति गौण है। दूसरों पर अनुशासन करने से पहले खुद पर अनुशासन करना सीख लें तो दूसरों पर अनुशासन करने में सफल हो सकते हैं।

आज पलसाना के इस विद्या संस्थान में आए हैं। पाँचों भाई धार्मिक कार्य करते रहें। पलसाना में भी धार्मिक साधना चलती रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष कैलाश चपलोत, स्कूल के चेयरमैन कैलाश जैन तथा स्कूल प्रिंसिपल शालिनी ओझा ने अपने भाव व्यक्त किए।

तेरापंथ महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा स्कूल परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य शिवमुनि के वात्सल्य भाव ने हमें खींच लिया : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण जी बहुत उदार आचार्य हैं : आचार्य शिवमुनि

चलथान, सूरत ७ मई, २०२३

नैतिकता, नशामुक्ति और सद्भावना की अलख जगाने वाले तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता मुंबई की ओर गतिमान हैं। शनिवार को शाम की चिलचिलाती धूप में १३ किलोमीटर विहार कर पलसाना पधारे। वहाँ से ५ किलोमीटर की दूरी पर श्रमण संघ के आचार्य शिवमुनिजी के प्रवास की जानकारी प्राप्त होने पर आचार्यप्रवर और ५ किलोमीटर विहार कर अवध सांगरिला पधारे। रात्रि ८ बजे दोनों आम्नाओं के आचार्यों का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

रविवार प्रातः अवध सांगरिला में दोनों आचार्यों की मंगल सन्निधि में कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें सैकड़ों लोगों की उपस्थिति रही। शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि भगवान महावीर से जुड़े जैन शासन में हम सभी साधनारत हैं। जैन शासन में अनेक संप्रदाय हैं। अमूर्तिपूजक, स्थानकवासी संप्रदाय से ही तेरापंथ धर्मसंघ का उदय हुआ था। हमारा स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्यों से परस्पर सौहार्द और आध्यात्मिक मिलन होता रहा है। आचार्य शिवमुनि जी का तेरापंथ धर्मसंघ से पूरा संपर्क है। हमें इस प्रांगण में आज आना था परंतु हम कल ही आ गए। आचार्य शिवमुनि जी के वात्सल्य भाव और सौम्य मुद्रा ने हमें पहले ही यहाँ बुला लिया। कई वर्षों बाद आपसे मिलना हुआ है। सभी को धार्मिक-आध्यात्मिक प्रेरणा मिलती रहे।

आचार्य शिवमुनि जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आज ऐसे महान आचार्य का पदार्पण हुआ है जिन्होंने भारत, नेपाल और भूटान की लगभग १८००० किलोमीटर की यात्रा कर जन-जन को जागरूक कर जैन ध्वज को ऊँचा फहराया। आचार्यश्री महाश्रमण जी बहुत उदार हैं, यह इनकी बहुत बड़ी विशेषता है। हमने एक बार संवत्सरी एकता की बात की तो इन्होंने अपने कार्यक्रम में संवत्सरी एकता की घोषणा कर दी।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

संयम जीवन सुरक्षित रहे...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जीवन में अनेक लोगों से प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। गुरुओं से भी जो प्रेरणाएँ मिलती हैं, वो जीवन की थाती हो सकती हैं। आगम आदि ग्रंथों के स्वाध्याय से भी प्रेरणाएँ मिलती हैं। हम संयम की जितनी निर्मलता बढ़ा सकें, बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। अनेक साधुओं व साध्वियों से भी प्रेरणाएँ मिली थीं। आदमी दूसरों से उपकृत होता है तो उसे दूसरों का उपकार भी करते रहना चाहिए।

अनेक साधु-साध्वियों का सहयोग मुझे मिलता रहता है। मैं भी सभी को सहयोग देता रहूँ। संयम की निर्मलता सोने की तरह मेरी भी बढ़े। संयम की चद्दर के साथ साधना अच्छी चले और दायित्व की चद्दर भी निर्मल रहे। धर्मसंघ हमारा उपकारी है। मैं आज मुनि सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' को श्रद्धा के साथ नमन करता हूँ। उनके हाथों से दीक्षित चारों ही संत यहाँ उपस्थित हैं।

महामना आचार्य भिक्षु के इस धर्मसंघ में हमें दीक्षित होने का मौका मिला। गुरुदेव तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को तो साक्षात् देखा है। अमृत महोत्सव वर्ष पर साधु-साध्वियों, समणियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने संकल्प भी लिए हैं। कुल ५१-५१ संकल्प हैं, वो जितना हो सके पालन करने का प्रयास करें। मुमुक्षु संख्या वृद्धि का प्रयास हो।

आज साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का भी जन्म दिवस है। साध्वीप्रमुखा के पद पर मनोनीत होने के बाद आज १ वर्ष संपन्न हो रहा है एवं दूसरे वर्ष में प्रवेश हो रहा है। उनके प्रति भी मैं बहुत-बहुत शुभेच्छा व्यक्त करता हूँ। साध्वीप्रमुखाश्री दीर्घकाल तक धर्मसंघ की सेवा करती रहे, साध्वी संघ की चित्त समाधि के लिए कार्य करती रहे, यही मंगलभावना। यह उनके जीवन का स्वर्णिम काल है। मैं उनके प्रति शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

पूज्यप्रवर के संयम जीवन के ५०वें वर्ष के प्रसंग पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शुभकामना संदेश भेजा जिसका वाचन मुख्य मुनिप्रवर ने किया।

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जो व्यक्ति गुरुजनों की सेवा करता है, गुरुजनों का बहुमान करता है उसका साधुत्व निर्मल रहता है। आचार्यश्री महाश्रमण जी अत्यंत करुणाशील आचार्य हैं। रुग्णजनों एवं बाल साधुओं के प्रति भी उनके भीतर में करुणा का स्त्रोत बहता रहता है। उन्हें यश या प्रतिष्ठा की कोई भावना नहीं है। ऐसी अनेक विशेषताओं ने उन्हें अध्यात्म के शिखर पर पहुँचाया है। मुनिवृंद एवं समणीवृंद द्वारा मधुर गीत प्रस्तुत किए गए।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री की प्रत्येक गतिविधि के साथ स्व-कल्याण एवं पर-कल्याण की भावना जुड़ी हुई होती है। उन्होंने अनेक लोगों को नशा मुक्त किया है। उन्होंने अनेक रोगियों को ऐसे मंत्र दिए हैं जिसके द्वारा वे रोग मुक्त हो गए हैं। अनेक लोगों को मांसाहार भी छुड़ाया है। पूज्यप्रवर जनकल्याण के लिए सदैव समर्पित है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी महान उपशम योगी हैं। आचार्यप्रवर की अनासक्त चेतना श्रेष्ठ है। उनके संयम पर्याय की उत्तरोत्तर उज्ज्वलता की मंगलकामना करती हूँ।

मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री के साथ ही दीक्षा लेने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं उनका सहयात्री सहदीक्षित एवं सहजात होने का गौरव अनुभव करता हूँ।

आचार्यश्री के संसारपक्षीय भ्राता सूरजकरणजी दुगड़ एवं श्रीचंदजी दुगड़ ने बचपन के संस्मरण सुनाए तो श्रोता भाव-विभोर हो गए। मुनि कुमारश्रमण जी ने आचार्यश्री की जागरूकता एवं चरित्र की निर्मलता की हृदय से अनुमोदना की। तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनसुख सेठिया, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा, भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के संजय जैन, अभातेयुप अध्यक्ष पंकज डागा, टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, अणुविभा गुजरात प्रभारी अर्जुन मेडतवाल आदि ने अपने भाव प्रस्तुत किए। अभातेयुप द्वारा परिसंवाद, उपासक श्रेणी द्वारा मधुर गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मुंबई का विशाल संघ आचार्यश्री के श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। दायित्व हस्तांतरण कार्यक्रम के अंतर्गत आचार्य महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति, सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा ने दायित्व का ध्वज आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, मुंबई के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ के हाथों में सुपुर्द किया तो पूरा पंडाल जय-जय ज्योति चरण - जय-जय महाश्रमण की मंगल ध्वनि से गूँज उठा।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में उन्नति के लिए अहंकार से बचें : आचार्यश्री महाश्रमण

सचिन, सूरत ५ मई, २०२३

सूरत का १५ दिवसीय ऐतिहासिक प्रवास संपन्न कर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रातः भगवान महावीर यूनिवर्सिटी से लगभग १३ किलोमीटर का विहार कर सचिन स्थित एल०डी० हाईस्कूल पधारे।

अध्यात्म के शिखर पुरुष ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन का एक गुण होता है—मार्दव, निरहंकार। अहंकार-घमंड आदमी को पतन की ओर ले जाने वाला होता है। विनय का भाव आदमी को उन्नति की ओर ले जाने वाला होता है।

साधु कषायों से प्रतून होता रहे। कषाय क्षीण हो जाए तो साधुता प्रशस्त हो सकती है। साधु को घमंड में नहीं आना चाहिए। साधु तो निर्मलता को प्राप्त करे। तिथि के हिसाब से तो मेरा दीक्षा दिवस कल था। तारीख के हिसाब से आज ५ मई को मेरी दीक्षा हुई थी। दीक्षा दिवस तो चला गया। उपचार से दिन मना लेते हैं। दीक्षा दिवस से औरों को संयम की प्रेरणा मिल सकती है।

आदमी जीवन में संयम को पुष्ट करे। साधु तो पाँच आश्रवों को छोड़ने वाला, तीन गुप्तियों से गुप्त होता है। छः काल के जीवों की हिंसा नहीं करता है। पाँच इंद्रियों का निग्रह करने वाले होते हैं। धीर-गंभीर होते हैं। वीर होते हैं और मोक्ष की ओर दृष्टि रखने वाले होते हैं। हम सब इस पथ पर स्थित हैं। हमारे पूर्वाचार्यों ने अनेकों को दीक्षित किया। साधुपन के सामने करोड़ों की संपत्ति तुच्छ है। वे धन्य हैं, जिनको संयम रत्न प्राप्त हो गया है।

बचपन में दीक्षा ग्रहण कर आजीवन शुद्ध संयम पालें तो बहुत ऊँची बात हो जाती है। साधु संयम की चद्दर अंत समय तक उजली रखें। जैसे संयम की चादर ओढ़ी थी वैसी ही चादर अंत समय तक रहे। संयम की यात्रा में विराम न आए, अबाध रूप से चलती रहे। भौतिकता के रूप में निदान-लालसा न हो। साधु पुण्य की इच्छा न करे। निर्मलता, निर्जरा और संवर की इच्छा करे।

संयम जीवन जीएँ और पंडित मरण करें। शासन हमारे लिए तो कल्पवृक्ष है शासन का हमारे ऊपर बहुत उपकार है। अनुशासन में रहकर साधना करना बड़ी बात है। संघ एक जहाज के समान है, जिसके द्वारा हम जल्दी आगे पहुँच सकते हैं। हम संयम की अच्छी साधना करते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि यात्रा एक मंजिल पाने का पड़ाव है। आचार्यप्रवर बाहरी जगत की यात्रा कर रहे है, साथ में भीतरी जगत की भी यात्रा कर रहे हैं। जो भीतरी यात्रा करता है वो वास्तव में प्रवज्या के अर्थ को सार्थक करता है। दीक्षा का अर्थ ही है, गति करना, गतिशील बनना। जो भीतरी जगत के प्रति जागरूक रहता है, वो दुनिया को कुछ दे सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। तेरापंथ किशोर मंडल एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों में अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने आराध्य के श्रीचरणों की अभ्यर्थना की।

स्थानीय सभाध्यक्ष सुखलाल खीमेसरा, तेयुप अध्यक्ष पिंटू मणोत, अणुव्रत समिति अध्यक्ष पवन गांधी, राजमल काल्या एवं महिला मंडल की सीमा सहलोत ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्य शिवमुनि के वात्सल्य भाव ने हमें...

(पृष्ठ २ का शेष)

हम एक वृक्ष की दो शाखाओं के समान हैं। उन्होंने आगे फरमाया कि आपके आगमन से पहले यह बात चल रही थी कि समय कम होगा मिलने का तो मैंने कहा कि उन्हें पधारने तो दो जहाँ आंतरिक भावों का जोर होता है, स्नेह होता है, वहाँ समय की सीमा नहीं रहती है। दोनों आचार्यों ने संवत्सरी के एक ही दिन करने के विषय में चर्चा की। जैन एकता के महनीय और आकस्मिक कार्यक्रम के पश्चात् ६ बजे चलथान की ओर विहार किया।

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने चलथान में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि गृहस्थ लोग अपनी आजीविका के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के उपाय काम में लेते हैं। अर्थार्जन करने का उपाय करते हैं।

ईमानदारी एक ऐसा तत्त्व है, जो चेतना-आत्मा को निर्मल रखने में योगदायी होता है। समाज व आदमी का व्यवहार अच्छा शांतिमय रहता है। गृहस्थों को ईमानदारी को महत्त्व देना चाहिए। दुकानदारी में भी ईमानदारी रहे। दुकानदार व ग्राहक भी ईमानदार हो। ईमानदारी तो जैन-अजैन सभी का कर्तव्य-धर्म है, वो सबमें रहनी चाहिए।

ईमानदारी के लिए दो चीजें हैं—झूठ नहीं बोलना और चोरी नहीं करना। सत्यमेव जयते। ईमानदारी की मंजिल बढ़िया है। आदमी में विकास की भावना हो। ईमानदारी हमारे लिए कल्याणकारी बन सकती है।

आज चलथान आना हुआ है। यहाँ खूब धार्मिक चेतना अच्छी रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि तत्त्व चर्चा चल रही थी कि संसार में दुर्लभ क्या है? किसी ने कहा कामधेनू दुर्लभ है, किसी ने कहा चिंतामणी रत्न दुर्लभ है। कल्पवृक्ष और देव दर्शन भी दुर्लभ है। जैन दर्शन जानने वाले ने कहा कि संसार में चार चीजें दुर्लभ हैं—मनुष्यत्व, ज्ञान, श्रद्धा और संयम में पराक्रम। संत महापुरुषों को भी दुर्लभ बताया गया है। मनुष्य जन्म को हम सफल बनाएँ। मनुष्य चिंतनशील प्राणी है, वह विकास कर सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष सुरेश पितलिया, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला, कन्या मंडल ने सुंदर प्रस्तुति से अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष्य में मुख्यमुनि महावीर कुमारजी द्वारा रचित गीत

श्री संत शिरोमणि महाश्रमण का सुंदर सुखकर साया है।
दीक्षा कल्याण महोत्सव का शुभ पावन अवसर आया है।।

कालू जप किया गहन मंथन, निर्णय जग के तोडूं बंधन।
तत्काल त्याग कर शादी का, वैराग्य प्रवर प्रकटाया है।।१।।

द्वादश वय बन गए संन्यासी, तेजस्वी संयम अभ्यासी।
साधु हो महाश्रमण जैसा, गुरु तुलसी ने फरमाया है।।२।।

रत्नत्रय के तुम आराधक, समता के श्रेष्ठ महासाधक।
उपशम है सार साधुता का, वच सच करके दिखलाया है।।३।।

मंत्री मुनिवर द्वारा दीक्षित, गुरुद्वय से शिक्षित संपोषित।
श्री महाप्रज्ञ विभु ने गण का दायित्व सकल संभाला है।।४।।

उत्कृष्ट आंतरिक तप तेरा, है प्रबल बाह्य तप का घेरा।
गुरुवर मुख महातपस्वी का, महिमामंडित वर पाया है।।५।।

सम शम श्रम से वर श्रमण बनें, श्रमणों में भी महाश्रमण बनें।
परमार्थ समर्पित अर्धसदी, संयम सुरतरु सरसाया है।।६।।

लाखों-लाखों के कल्याणी, आनंद शांति सुख वरदानी।
युग-युग का कल्याण करो, हर भक्त हृदय ने गाया है।।७।।

लय : महावीर तुम्हारे चरणों में----

आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति उद्गार

अर्हम्

● **साध्वी मधुयशा** ●

स्वर्ण जयंती का शुभ अवसर, कैसे आज बधाऊँ।
फूल खिले भावों के सुंदर, चरणों में आज चढ़ाऊँ।।

नेमा माँ के राज दुलारे, दुगड़ कुल के तुम उजियारे।
शासन के सरताज बने, दिखलाते नित नव्य नजारे।
अनुपम व्यक्तित्व तुम्हारा, शब्दों में बाँध न पाऊँ।।

सहज सौम्यता मधुरभाषिता, सहनशीलता भारी।
अप्रमत्तता गहरी निष्ठा, लगती है मनहारी।
तेरे गुण गौरव की गाथा, हर पल स्मृति में लाऊँ।।

अर्ध शताब्दी आज मनाएँ, पूर्ण शताब्दी भी मन भाए।
करें कामना हम मंगलमय, युगों-युगों तक सन्निधि पाएँ।
दीप जला आस्था के जगमग, श्रद्धा से शीष झुकाएँ।।

युवा दिवस का आयोजन

अणुविभा, जयपुर।

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव का आयोजन शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, जयपुर द्वारा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाश्रमण अष्टकम् के संगान से हुआ।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा महोत्सव मौन संदेश देता है कि 'युवा जागे, सद्गुण संपन्न बने व ऊर्जावान बने'। इसके लिए जरूरी है संतों का संपर्क। जैसे बालक अतिमुक्तक ने गणधर गौतम की अंगुली पकड़ी तो वह महावीर तक पहुँच गया, बालक मोहन भी मुनि सुमेरमलजी के सान्निध्य में पहुँचा तो उन्होंने उसे परम गुरु तुलसी-महाप्रज्ञ के पास पहुँचा दिया। फिर वे मुनि मुदित से यात्रा करते-करते युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण बन गए।

आचार्यप्रवर की दीक्षा वीर्यवती दीक्षा है क्योंकि आपका तप, संयम व इंद्रिय निग्रह अनुत्तर है। यदि युवावर्ग आपका अनुगमन करे तो समाज का कायाकल्प हो सकता है। युवा दिवस पर प्रसारित परिपत्र का विशेष संकल्पित होकर साधना करें तो अभ्यास के द्वारा हमारे भीतर भी सद्गुणों का विकास होगा और तेरापंथ समाज शक्तिशाली बन सकेगा।

साध्वी मधुलता जी ने युवा दिवस पर आचार्यप्रवर के वैराग्य की पृष्ठभूमि को सरस शैली में प्रस्तुत किया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हिम्मत डोसी, तेयुप अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा, शहर महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला सुराणा व बीना भांडिया ने वक्तव्य द्वारा अपने-अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। महिला मंडल व कन्या मंडल ने सामूहिक गीतिका द्वारा सुमधुर स्वरों में प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक सौरभ जैन ने किया और आभार ज्ञापन गौतम बरड़िया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 मई, 2023

✦ *हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

उत्सव के रंग ननद-भाभी के संग कार्यशाला का आयोजन

राजाराजेश्वरी नगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, राजाराजेश्वरी नगर द्वारा उत्सव के रंग ननद-भाभी के संग कार्यशाला का आयोजन लता बाफना की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंडल की संरक्षिका बहनें गुलाबबाई छाजेड़ एवं सुशीला बाई छाजेड़ द्वारा किया गया। मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति की गई।

अध्यक्ष लता बाफना ने पधारी सभी बहनों का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में ६ ननद-भाभियों के जोड़ों ने भाग लिया। सभी ननद-भाभियों ने अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को कविता, मुक्त एवं विचारों के माध्यम से साझा किया। सभी ननद-भाभियों को सम्मानित किया गया। अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया ने रिश्तों के महत्त्व को बताया।

कार्यक्रम में राजस्थान पत्रिका के डिप्टी न्यूज एडिटर योगेश शर्मा की उपस्थिति रही। कन्या मंडल से नम्रता छाजेड़ एवं प्रेक्षा सुराना के फेयर वेल कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। भारतीय संस्कृति में बेटियों का अपना अलग महत्त्व है। हमारे पूर्वजों द्वारा बताए महत्त्वपूर्ण परंपरा को ध्यान भारतीय संस्कृति से रूबरू कराते हुए कन्या मंडल एवं महिला मंडल की बहनों द्वारा रोचक नाटक की प्रस्तुति दी गई। सुधा दुगड़ का पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष शोभा बोथरा ने किया। आभार मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। कार्यक्रम में संरक्षिकाएँ, पदाधिकारी, कार्यकारिणी बहनें अच्छी संख्या में उपस्थित रहीं।

बच्चों में हो अच्छे संस्कारों का निर्माण

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण कार्यशाला के अंतर्गत उम्मीद एक बेहतर कल की वर्कशॉप के आठवें और अंतिम चरण का कार्यक्रम तेममं द्वारा राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, इंदिरा गांधी नगर, बालोतरा में किया गया। महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा के द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का प्रारंभ हुआ।

कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा ने विद्यार्थियों को महाप्रयाण ध्वनि का प्रयोग नौ बार करवाया। अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रिंसिपल समयसिंह गुर्जर ने कहा कि इन कार्यशालाओं के पश्चात काफी परिवर्तन बच्चों में आया है। उन्होंने तेममं की बहनों को कार्यक्रम के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया। अध्यापक धीराराम डीलर ने भी महिला मंडल को धन्यवाद दिया। तेममं, बालोतरा को इस सराहनीय कार्य के लिए प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। तेममं ने भी प्रिंसिपल समय सिंह गुर्जर एवं सभी अध्यापकगण को सम्मानित किया। बच्चों को प्रश्न-उत्तर विजेताओं को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा ने किया। कार्यक्रम में लगभग १७० बच्चे उपस्थित हुए।

उर्वीमुखरित दिवारों का अनावरण

साउथ कोलकाता।

अभातेममं के निर्देशानुसार, तेममं के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया की अध्यक्षता में तेरापंथ कन्या मंडल, साउथ कोलकाता द्वारा क्रियान्वित उर्वी–मुखरित दिवारें Lifestyle for Environment का अनावरण किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से की गई। कार्यक्रम में समागत सभी आगंतुकों का स्वागत कन्या मंडल सह-संयोजिका प्रेक्षा पोरवाल ने किया।

जी-२० के अंतर्गत सी-२० में अभातेममं के चयन होने पर कन्याओं ने Global Warming एवं Save Water पर Mohan Clinic की विभिन्न दिवारों पर अपने हाथों से बनाई तस्वीरों के माध्यम से सभी को संदेश पहुँचाया कि किस प्रकार हम धरती की सुरक्षा कर सकते हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया एवं कॉउंसिलर वार्ड न० ८७ मनीषा बोस ने दिवारों पर संदेशात्मक कलाकृतियों का अवलोकन कर कन्याओं की मेहनत की सराहना की। राष्ट्रीय कन्या प्रभारी अर्चना भंडारी ने कन्याओं के कार्य की प्रशंसा की।

इस अवसर पर अभातेममं की संरक्षिका तारा देवी सुराना, ट्रस्टी डॉ० सूरज बरड़िया, कल्पना बैद, ज्योति जैन, परामर्शक लता गोयल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सरिता डागा, प्रचार मंत्री सरिता बरलोटा, बंगाल प्रभारी रमण पटावरी एवं स्थानीय अध्यक्ष अनीता सुराणा, संरक्षिका चंपादेवी कोठारी, प्रतिभा कोठारी, कन्या मंडल प्रभारी सुमन गोलछा, डॉ० अंजुला विनायकिया एवं कन्या मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल से अवनी नाहटा, साक्षी नाहटा एवं उर्वी का अनुभव बताते हुए संयोजिका दृष्टि सुराना ने आभार ज्ञापन किया।

'जैन धर्मोस्तु मंगलं' कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

अभातेममं के तत्त्वावधान में महिला मंडल द्वारा आयोजित 'जैन धर्मोस्तु मंगलं' कार्यशाला का प्रारंभ मुनि जिनेश कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से ईजडसीसी ऑडिटोरियम सॉल्टलेक में हुआ। गुरु को समर्पित संस्कृत गीत का संगान भी किया गया।

कार्यक्रम में अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्षा, संरक्षिकागण, ट्रस्टीगण, पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्यगण, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के केंद्रीय पदाधिकारीगण, अभातेयुप के केंद्र पदाधिकारीगण कोलकाता क्षेत्र एवं उपनगरीय सभाओं, तेयुप, महिला मंडल एवं टीपीएफ के अध्यक्ष-मंत्री उपस्थित रहे।

चीफ ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी ने तत्त्वज्ञान पाठ्यक्रम से जुड़ने के लिए परिषद् को प्रेरित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने वक्तव्य दिया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता राजुल मणोत ने अनेकांत का दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया।

प्रमुख वक्ता डॉ० जगत राम भट्टाचार्य ने वक्तव्य में कहा कि महाव्रत का पालन ना कर सके तो अणुव्रत का पालन अवश्य करें। उन्होंने श्रावक के कर्तव्यों की भी विवेचना की।

आचार्य महाश्रमण - द्वितीया आचार्य तुलसी

● **मुनि वर्धमान** ●

जब मैंने 'मेरा जीवन - मेरा दर्शन' के कुछ भाग पढ़े, तो मैंने पाया कि आचार्य तुलसी और आचार्य महाश्रमण में कई समानताएँ हैं, जैसे–

- ❑ दोनों ही गुरुओं ने ओसवाल परिवार में जन्म लिया।
- ❑ दोनों ही गुरुओं के संसारपक्षीय पिताजी का नाम झूमरमल जी था।
- ❑ दोनों ही गुरुओं का नाम 'तेरापंथ की राजधानी' में हुआ–
  आचार्य तुलसी - वर्तमान राजधानी लाडनूं
  आचार्य महाश्रमण - भूतपूर्व राजधानी सरदारशहर
- ❑ दोनों ही गुरुओं के घर में 'मोहन' नाम का व्यक्ति था।
  मोहन - आचार्य तुलसी के संसारपक्षीय भाई
  मोहन - आचार्य महाश्रमण का संसारपक्षीय नाम
- ❑ दोनों ही गुरुओं के दीक्षा के प्रसंग में आचार्य कालूगणी का रोल था।
  आचार्य तुलसी - कालूगणी के व्यक्तित्व को देखकर प्रभावित हुए और दीक्षा ग्रहण की।
  आचार्य महाश्रमण - कालूगणी के महाप्रयाण दिवस के दिन कालूगणी की माला फेरी और निर्णय किया कि मुझे तो साधु बनना है और फिर दीक्षा ग्रहण की।
- ❑ आचार्य तुलसी गौर वर्ण थे और आचार्य महाश्रमण भी गौर वर्ण हैं।
- ❑ दोनों ने धर्मसंघ में नवीनता लाई।
- ❑ तेरापंथ धर्मसंघ में सिर्फ ये दो ही आचार्य हैं जिन्होंने दक्षिण यात्रा की।
- ❑ दोनों ही प्रथम आचर्य हैं।
  आचार्य तुलसी - तेरापंथ की तीसरी शताब्दी के प्रथम आचार्य।
  आचार्य महाश्रमण - तेरापंथ के दूसरे दशक के प्रथम आचार्य।
- ❑ 'साध्वी प्रमुखा' के चयन विषय में भी समानता है।
  सूर्योदय के बाद साध्वियाँ गुरु वंदना के लिए उपस्थित हुईं। आचार्यश्री तुलसी ने सूचित कर दिया कि आज प्रवचन के समय साध्वियों की व्यवस्था करने का विचार है। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने भी ऐसा ही किया।
- ❑ 'साध्वी प्रमुखाश्री' के चयन दिवस में चौदह के अंक की समानता है।
  आचार्य तुलसी ने साध्वी प्रमुखा (कनकप्रभाजी) को १४ जनवरी के दिन बनाया था।
  आचार्य महाश्रमण ने साध्वी प्रमुखा (विश्रुतविभा जी) को चौदस के दिन बनाया था।
- ❑ दोनों ही आचार्यों ने साध्वी प्रमुखा की नियुक्ति उत्सव वाले दिन की।
  साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी की नियुक्ति मकर संक्रांति के दिन।
  साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा जी की नियुक्ति आचार्य महाश्रमण दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के दिन।
- ❑ दोनों ही गुरुओं ने भव्य दीक्षा महोत्सव का आयोजन किया।
  आचार्य तुलसी ने एक साथ ३१ व्यक्तियों को दीक्षा दी।
  आचार्य महाश्रमण ने एक साथ ४३ व्यक्तियों को दीक्षा दी।
- ❑ दोनों ही आचार्यों ने प्रलंब यात्राएँ की।
- ❑ आचार्यश्री तुलसी प्रायः सुबह ४ बजे जाग जाते थे।
  आचार्यश्री महाश्रमण का भी यही समय है सुबह विराजने का।
- ❑ दोनों ही आचार्यों ने 'मंत्री मुनि' पद किसी संत को दिया।
  आचार्य तुलसी ने मगनलालजी स्वामी को।
  आचार्य महाश्रमण ने सुमेरमलजी स्वामी को।
- ❑ आचार्य तुलसी को संगीत में बहुत रुचि थी। उनका कंठ मधुर था।
  आचार्य महाश्रमण का भी जबरदस्त Singing Talent है।
- ❑ दोनों ही गुरुओं ने 'लाल किला' (Red Fort, Delhi) पर भव्य कार्यक्रम किया।
- ❑ दोनों ही गुरु 'K' से Kolkata, Kerela, Karnataka और Kanyakumari पधारे।
- ❑ दोनों ही आचार्यों ने नया पद सृजन किया।
  आचार्य तुलसी ने महाश्रमण और महाश्रमणी का पद।
  आचार्य महाश्रमण ने मुख्य मुनि और साध्वीवर्या का पद।
- ❑ आचार्य तुलसी ने मुंबई में चौमासा किया और अगला मर्यादा महोत्सव मुंबई में ही किया।
  आचार्य महाश्रमण का भी यही भाव है। २०२३ का चौमासा और २०२४ का मर्यादा महोत्सव मुंबई में है।
- ❑ आचार्य तुलसी ने योगक्षेम वर्ष लाडनूं में मनाया और आचार्य महाश्रमण ने भी योगक्षेम वर्ष लाडनूं में मनाने की घोषणा की है।
- ❑ आचार्य तुलसी ने एक व्यक्ति को दीक्षा दी और उनका नाम रखा 'मुनि वर्धमान'।
  आचार्य महाश्रमण ने भी एक व्यक्ति को दीक्षा दी और उसका नाम रखा 'मुनि वर्धमान'।

'महिमा जन्मदाता की' कार्यक्रम का आयोजन

फरीदाबाद।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में सुरम्य प्रांगण में 'महिमा जन्मदाता की' एक विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। सभी ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

साध्वी अणिमाश्री जी ने 'माँ ही मंदिर, माँ ही पूजा, पिता से बढ़कर कौन है दूजा' विषय पर उद्‌बोधन देते हुए कहा कि माँ परिवाररूपी उपवन की कुशल माली होती है जो उस उपवन के हर फूल को खिलने व मुस्कराने के लिए उचित संपोषण प्रदान करती है। माँ की ममता व वात्सल्य के सामने हिमालय भी बौना नजर आता है। माँ ममता का महासागर है, सहनशीलता की प्रतिमूर्ति है, समता व समाधि का मंदिर है। माँ-पिता का कर्ज उतारने का फर्ज अदा कीजिए, उनको प्रणाम करें। उनके चरणों में अपना सिर रखिए। उनका ऊर्जामय हाथ अगर सिर पर आ गया तो वह आपकी जिंदगी का रक्षा कवच बन जाएगा। माँ-बाप के ऋण से उऋण होने के लिए उन्हें धर्मध्यान में सहयोग, गुरु दर्शन व सेवा करवाएँ वो ही माँ-बाप की सच्ची सेवा है।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि पिता परिवार रूपी फ्लाइट का पायलट होता है जो परिवार के हर सदस्य को विकास की ऊँची उड़ान भरना सिखाता है। पिता वो शख्श है जो न दिन देखता है न रात, उसे तो परिवार के हालात ही दिखाई देते हैं। पिता क्रेडिट कार्ड होता है, बैलेंस न हो तब भी अपने बच्चे की हर इच्छा को पूरी करने का प्रयत्न करता है।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने संचालन करते हुए अपने भाव व्यक्त किए।

सभा मंत्री संजीव जैन ने सुंदर गीत प्रस्तुत किया। नवरतन मल बांठिया ने मंगल संगान किया। सभाध्यक्ष गुलाबचंद बैद, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष इंदरचंद गोलछा, मनोज दुगड़, विक्रम राखेचा ने साध्वीश्री जी के प्रवास व कार्यक्रमों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए आगामी विहार यात्रा के लिए मंगलकामना की। सभा मंत्री संजीव जैन ने संचालन किया।

क्या आपका व्यक्तित्व आकर्षक है? कार्यशाला का आयोजन

जोधपुर।

सिवांची ओसवाल संस्थान, जोधपुर द्वारा साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में 'क्या आपका व्यक्तित्व आकर्षक है?' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ।

स्वागत वक्तव्य व साध्वीश्री का परिचय संस्थान अध्यक्ष प्रकाश जीरावला ने किया। साध्वी गौतमप्रभा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी चारित्रप्रभा जी ने कहा कि व्यक्ति के चेहरे की मुस्कान टेढ़ी-मेढ़ी जिंदगी में भी प्रेम रस घोल सकता है।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि सभी व्यक्तियों का व्यक्तित्व अद्वितीय होता है। सबकी अपनी खासियत होती है। सभी के मस्तिष्क का विकास अलग-अलग है, पर सभी की विविधता होते हुए भी हम किस प्रकार ज्ञान का उपयोग करते हैं, यह महत्त्वपूर्ण है।

हम स्वयं को आँके कि हम कहाँ हैं, हमें किस प्रकार का व्यक्तित्व बनाना है? समझदार व्यक्ति अंतिम तीन की तरह न बनें। स्टार व्यक्तित्व का लक्ष्य बनाएँ, संकल्प करें की मुझे भी स्टार बनना है। स्वयं को कम ना आँकें।

व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के चार उपाय हैं–

(१) चिंतन में उदारता हो, (२) सोच में सकारात्मकता हो, (३) व्यवहार मानवीय हो, (४) सफलता में विनम्रता रहे। यह चार उपाय हमारे व्यक्तित्व को निखार सकते हैं।

सकारात्मक सोच का व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक चिंतन विचारों को देखने से, विश्लेषण करने से हो सकता है। हम विचारों को रोक नहीं सकते पर विचारों की दिशा को बदल सकते हैं।

हमारा व्यवहार मानवता भरा हो और इस प्रकार के विनम्र बनें की सफलता की सीढ़ियाँ तो चढ़ें पर अहं का भाव न आए। आभार ज्ञापन तेयुप सरदारपुरा अध्यक्ष महावीर चौधरी ने किया। मंच संचालन तेरापंथी सभा सरदारपुरा मंत्री महावीर चोपड़ा ने किया।

✦ *अहिंसा ऐसा तत्त्व है जो हमारी आत्मा का कल्याण करता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✳ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

साउथ कोलकाता।

मनीष एवं ज्योति सेठिया का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक महाबीर प्रताप दुगड़ एवं सह-संस्कारक की भूमिका परिषद के सहमंत्री राकेश नाहटा व अध्यक्ष रोहित दुगड़ ने निभाई।

परिषद के अष्ट मंगल एवं मंगलभावना यंत्र भेंट कर परिवार के प्रति मंगलकामना की। परिषद के सहमंत्री-द्वितीय अंकित दुगड़ सहित अनेक गणमान्यजन कार्यक्रम में उपस्थित थे।

उदयपुर।

मनोज-संगीता भंसाली, उदयपुर-छापर निवासी के नवीन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुबोध दुगड़, मनोज लोढ़ा, पंकज भंडारी ने लोगस्स पाठ, उपसर्गहर स्त्रोत, पाँ बार सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण, भगवान पार्श्वनाथ स्तुति, भगवान महावीर स्तुति, पंच परमेष्ठी वंदना एवं अन्य मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

तेयुप, उदयपुर द्वारा मंगलभावना पत्र परिवारों को भेंट किया गया। तेयुप अध्यक्ष अक्षय बड़ाला, मंत्री विक्रम पगारिया ने पारिवारिकजनों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

अहमदाबाद।

जितेंद्र कुमार बोथरा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक नानालाल कोठारी ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

परिवार की महिलाओं ने मंगलाचरण किया। परिषद् की ओर से मंगलभावना पत्रक की भेंट की गई। परिवार की ओर से संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया गया।

एक शाम महाप्रज्ञ के नाम कार्यक्रम का आयोजन

बीड।

मुनि डॉ० पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की १४वीं वार्षिक पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में तेरापंथ समाज, बीड द्वारा जिनेंद्र मरलेचा के निवास स्थान पर 'एक शाम महाप्रज्ञ के नाम' कार्यक्रम का आयोजना किया गया।

इस अवसर पर मुनि डॉ० पुलकित कुमार जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी की कृपा और करुणा को मैंने साक्षात् निहारा है। जब मैं बालमुनि के रूप में था आचार्यश्री स्वयं हमारी ध्यान की क्लास लगाते थे। मुनिश्री ने अनेक संस्मरण सुनाते हुए संयम प्रदाता के प्रति गीतिका का संगान किया। मुनि नचिकेता जी ने महाप्रज्ञ जी का जीवन कर्तृत्व उजागर करते हुए गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में भूमि, नम्रता, समदरिया, प्रतिक्षा, श्रेयांस, अभिलाषा, सविता मरलेचा, मोक्षा, परी, आशाबाई ओझल, रजनी, प्रेक्षा समदरिया, मोती भंडारी आदि अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्यश्री के प्रति गीत, कविता एवं वक्तव्य के द्वारा विनयांजलि भाव प्रस्तुत किए।

आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में तेममं एवं सभा द्वारा 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः' का अखंड जाप तेरापंथ भवन में रखा गया। मुनिश्री का बीड़ में छह दिवसीय प्रवास कार्यकारी एवं सक्रियता भरा रहा।

त्याग-संयम का जीवन आनंददायक

नोखा।

मानव का जीवन अनमोल है उसे व्यर्थ व्यसनों एवं आलस्य, प्रमाद में नहीं खोना चाहिए। त्याग, संयम का जीवन ही शक्ति व आरामदायक हो सकता है। मंगलपाठ के साथ शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने यह उद्‌गार व्यक्त किए।

प्रारंभ में 'श्री नमोकार का जाप जपै' गीतिका का संगान करते हुए सम्यक्त्व, पुण्य-पाप, जीव-अजीव पर तत्त्वज्ञान की शिक्षा साध्वी विधिप्रभा जी ने दी।

साध्वी कुसुमप्रभा जी ने कहा कि ईर्ष्या, घृणा, लोभ, लालच, चोरी से दूर रहने की बात कही। करुणा, दया, सेवा भावना से ही कल्याण होगा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 मई, 2023

✦ गृहस्थ को भी धर्म करने का अधिकार है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव, पदाभिषेक एवं दीक्षा दिवस के आयोजन

नोएडा

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा दिवस महोत्सव के कार्यक्रम का आयोजन उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में नोएडा तेरापंथी सभा जैन स्थानक के प्रांगण में हुआ।

मुनिश्री की प्रेरणा से कार्यक्रम में स्थानक में विराजित श्रमण संघ के साध्वी डालिमा जी एवं परिधि जी की सहभागिता से चार तीर्थ की उपस्थिति में अत्यंत उल्लास और उमंग के साथ गोल्डन दीक्षा दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। मुनि कमल कुमार जी ने आचार्यश्री के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके बाल्यावस्था, वैराग्यभाव, दृढ़ संघ भक्ति आदि अनेक गुणों से परिषद् को परिचित करवाया। चौदस की हाजरी के साथ आचार्य भिक्षु की अमिट मर्यादाओं को व्याख्यायित किया और श्रावकों को श्रावक निष्ठा पत्र का भी उच्चारण करवाया।

मुनि अमन कुमार जी तथा मुनि नमि कुमार जी सहित स्थानक में विराजित साध्वी परिधिजी ने भी दीक्षा, संयम, चारित्र और तप के महत्त्व को उजागर करते हुए आचार्यश्री के प्रति अपने भाव रखे।

इस अवसर पर नोएडा सभाध्यक्ष रणधीर बैद, दिल्ली सभा उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, तेयुप से दिलीप कुंडलिया, नोएडा टीपीएफ प्रभारी प्रसन्न सुराणा, नोएडा जैन स्थानक मंत्री अनिल जैन, नोएडा के श्रावक मोतीलाल नाहटा, वरिष्ठ श्रावक किशनलाल बैद आदि गणमान्य व्यक्तियों ने अपने-अपने उद्गार व्यक्त किए।

तेमम, नोएडा की अध्यक्षा कविता लोढ़ा सहित महिला मंडल की बहनों ने गीतिका द्वारा अपनी श्रद्धा समर्पित की। नोएडा सहित आसपास के क्षेत्रों से समागत श्रावक-श्राविकाओं सहित संपूर्ण परिषद् ने गीत का संगान किया। मुनिश्री की प्रेरणा से ॐ ह्रीं श्रीं महाश्रमण गुरुवे नमः और नवकार मंत्र का जप श्रावक-श्राविकाओं द्वारा किया गया। इस अवसर पर सामायिक पचरंगी का क्रम भी रहा। मुनि नमि कुमार जी ने गुरुदेव के दीक्षा दिवस पर ११ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

अणुविभा, जयपुर

बहुश्रुत शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी व शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, जयपुर के तत्त्वावधान में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का १४वाँ आचार्य पदाभिषेक समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। युवा गायक संदीप भंडारी ने मंगल संगान किया।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी महान लब्धिधर, शक्तिधर व ज्योतिर्धर आचार्य हैं, ज्योतिपुंज हैं। उनकी एक-एक ज्योति किरण अंतस् के तमस् को प्रक्षालित कर देती है। बचपन से लेकर युगप्रधान आचार्य तक की यशस्वी यात्रा के विभिन्न पड़ावों को सरस शैली में प्रस्तुत करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्यप्रवर का व्यक्तित्व, कर्तृत्व और नेतृत्व विलक्षण है, निरूपम है। गुरुदेव के जीवन से संबंधित अनेक रोचक प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा आचार्यप्रवर अपने सिद्धांतों व नियमों में जितने दृढ़ हैं, उतने ही करुणाशील हैं।

शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी ने कहा कि महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी वात्सल्य के हिमालय हैं। आपका प्रभावक आभामंडल व प्रखर उद्बोधन बिना निमंत्रण लोगों की भीड़ आकर्षित कर लेता है। हम सबका परम सौभाग्य है कि ऐसी महान अध्यात्म विभूति, संत शिरोमणि हमें शास्ता के रूप में, भाग्यविधाता के रूप में प्राप्त है।

शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी द्वारा रचित गीतिका का साध्वीवृंद ने सामूहिक संगान किया। साध्वी मधुलेखा जी व साध्वी समितिप्रभा जी ने वक्तव्य व कविता के माध्यम से श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। पूर्व अध्यक्ष नरेश मेहता, मंत्री सुरेंद्र सेखनी व सौरभ जैन ने भी भावांजलि अर्पित की। महिला मंडल की बहनों ने सामूहिक गीतिका द्वारा आचार्यश्री की अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का संयोजन सुरेश बरड़िया ने किया।

तपामंडी

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी के पदाभिषेक का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी ने आचार्य अभिवंदना के साथ शुरू किया।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जी का अद्भुत व्यक्तित्व व अनुपम कर्तृत्व है। जिनका जीवन अनेक विशिष्ट गुणों का समवाय है। आपकी प्रत्येक सोच मानव शांति के साथ जुड़ी हुई है। विश्व संत आचार्य महाश्रमण जी का प्रत्येक आयाम विश्व कल्याण के साथ जुड़ा हुआ है। अहिंसा यात्रा के दौरान नैतिकता, सद्भावना व नशामुक्ति के संदेश से आपने जन-जन को लाभान्वित किया।

संयोजकीय वक्तव्य में साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी ने अपने आराध्य की अर्चना की। स्वागत भाषण के साथ सुनील जैन ने विचार रखे।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंजाब प्रांतीय तेरापंथ सभाध्यक्ष केवल कृष्ण गोयल ने विशेष आमंत्रित ब्रह्मकुमारी उषाजी ने कहा कि मैं तेरापंथ से बहुत प्रभावित हूँ, हम सब एकता के मंच से कार्य करें। तपामंडी से कन्या मंडल 'महाश्रमण दरबार' की रोचक प्रस्तुति, युवती बहनों ने सरगम अभिनव ओगाज व ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने कलाकारों ने वुइथ एक्शन प्रोग्राम देकर पूरी परिषद् को भाव-विभोर कर दिया।

सूनाम व तपामंडी महिला मंडल, अलका जैन, संजय जैन, मंडल की मंत्री इंदु जैन ने वक्तव्य व गीत से अभिव्यक्ति दी। साध्वी हेमंतप्रभा जी ने अपने विचार रखे। सभा मंत्री सुशील जैन ने आभार ज्ञापन किया।

इस अवसर पर त्याग-प्रत्याख्यान की मंजुषा डॉ० यशपाल सुनीता जैन ने साध्वीश्री जी को भेंट की। सभा द्वारा विशेष अतिथियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर भटिंडा, रामपुराफूल, सूनाम, संगरूर, लोंगोवाल, बनीला आदि क्षेत्रों से श्रद्धालुओं की उपस्थिति सराहनीय रही।

छापर

भिक्षु साधना केंद्र में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का १४वाँ पदाभिषेक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि वैशाख का महीना बड़ा भाग्यशाली है। एक ही महापुरुष के तीन महोत्सव इस माह के शुक्ल पक्ष में आते हैं। वि०सं० २०१६ के इस वैशाख महीने की शुक्ल पक्ष की नवमी के दिन सरदारशहर की पुण्य धरा पर हमारी आस्था के केंद्र आचार्य महाश्रमण जी ने एक शिशु के रूप में जन्म लिया, वि०सं० २०३१ की इसी मास और पक्ष की चतुर्दशी के दिन १२ वर्ष की वय में उन्होंने समय पथ स्वीकार किया और वि०सं० २०६७ में शुक्ला दशमी के दिन उन्होंने आचार्य पद पर आरोहण किया था। कहना चाहिए, दुगड़ कुल में एक बीज का वपन हुआ, वह कुछ ही अवधि में पौधा बन गया और देखते-देखते उसने कल्पवृक्ष का रूप ले लिया। वह एक ऐसा कल्पवृक्ष है जिसकी शीतल छाया में न केवल तेरापंथ धर्मसंघ बल्कि पूरी मानव जाति शीतलता का अनुभव कर रही है।

पूज्यप्रवर का जीवन गतिशीलता और श्रमशीलता की जीवंत कहानी है। रुकना और थकना ये दो शब्द उनकी जीवन पोथी में कहीं नहीं हैं। सात वर्ष लंबी यात्रा करने के बाद एक नई यात्रा पर उन्होंने अपने कदमों को बढ़ा दिया। उनके जन्म दिवस, पदाभिषेक दिवस और दीक्षा के ५०वें वर्ष पर हम उनके दीर्घकाल तक नेतृत्व की मंगलकामना करते हैं। शासनश्री ने इस अवसर पर भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का प्रारंभ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण से हुआ। मुनि हेमराज जी, मुनि आत्मानंद जी ने अपनी मंगलभावना प्रस्तुत की। रेखाराम गोदारा, मास्टर हुक्माराम, सूरजमल नाहटा, हुलासमल चोरड़िया, गजराज जैन, सरोज देवी, शोभा, हेमा, सज्जन, छाया ने अपने आराध्य की भक्ति में भाषण, गीत, मुक्तक प्रस्तुत किए।

नोखा

आचार्यश्री महाश्रमण इस सदी के महासूर्य, विलक्षण आचार्य हैं। ६० हजार किलोमीटर की पदयात्रा करके जन-जन को नैतिकता, सद्भावना, व्यसनमुक्ति का संदेश दे रहे हैं। एक करोड़ से अधिक लोगों को नशा छुड़ाया है। देश-विदेश में पदयात्रा करते हुए मुंबई की ओर अग्रसर हैं। आगम ज्ञाता, योगीराज, धैर्य संपन्न, प्रज्ञा संपन्न, कार्य कौशल, शांत-धीर गांभीर्ययुक्त जीवन प्रेरणादाई हैं। यह उद्गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने नोखा तेरापंथ भवन में आचार्यश्री महाश्रमण जी के ६२वें जन्म दिवस पर व्यक्त किए।

सूरत में विराजित आचार्यश्री महाश्रमण जी के संयम जीवन के ५०वें वर्ष के उपलक्ष्य में वर्धापन गीतिका का साध्वीवृंद ने संगान किया।

बायतु

साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्मोत्सव व १४वाँ पट्टोत्सव कार्यक्रम संयुक्त रूप से बायतु के तेरापंथ भवन में समायोजित किया गया। पंच कन्याओं के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ सभाध्यक्ष राकेश बागचार ने स्वागत भाषण के माध्यम से सभी का स्वागत किया।

साध्वी जिनबाला जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जो स्वयं शांतिधर हैं और अहिंसा की मशाल हाथ में लिए शांति स्थापित करने का सफलतम प्रयास कर रहे हैं। जो स्वयं शक्तिधर है और जन-जन को शक्ति की पहचान करा उसे सही दिशा में नियोजित करने का प्रशिक्षण भी दे रहे हैं।

साध्वी करुणाप्रभा जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन-वृत्त को अनेक रोचक संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए देव, गुरु, धर्म पर दृढ़-आस्थाशील रहने की प्रेरणा दी।

साध्वी प्राचीप्रभा जी ने अपने दीक्षा गुरु आचार्यश्री महाश्रमण जी की अभ्यर्थना में गीत की प्रस्तुति दी।

तेरापंथ कन्या मंडल व ज्ञानशाला ने संयुक्त रूप से मनमोहक नाटिका के माध्यम से आचार्यश्री महाश्रमण जी की अद्भुत व दिव्य शक्ति से जनता को अवगत कराया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने तथा प्रफुल्ल गोलेच्छा, दीपेश मालू, जीतू छाजेड़, सोनू छाजेड़ आदि ने भी कविता, मुक्तक, भाषण आदि के माध्यम से अपने आराध्य की अभिवंदना की। महिला मंडल की महिलाओं ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी भव्यप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। तेरापंथ धर्मसंघ के २५-३० घरों द्वारा बस्ती वाले क्षेत्र में जैन-जैनेत्तर भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

गंगाशहर

तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्म दिवस शांति निकेतन में समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सेवा केंद्र व्यवस्थापिका शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन का हर क्षण रोशनी से भरा हुआ है। जिनके जीवन का हर दिन मैनेजमेंट का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। हर माह सृजन की नई कहानी है। ऐसे आज्ञानिष्ठ, संयमनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ आचार्य का नाम है—आचार्य महाश्रमण।

साध्वी ललितकला जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी की जीवन यात्रा की चर्चा करते हुए कहा कि मोहन से मुदित और मुदित से महाश्रमण बनने के लिए ना जाने आपको कितनी बार अनुशासन रूपी, अग्नि में तपड़ना पड़ा।

साध्वी रोहितप्रभा जी, साध्वी शीतलयशा जी, साध्वी मृदुला कुमारी जी, साध्वी योगप्रभा जी, साध्वी मंजुलाश्री जी, साध्वी समृद्धिप्रभा जी आदि ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा उच्चारित महामंत्र नवकार से हुआ। तेरापंथी सभा के सहमंत्री पवन छाजेड़, महिला मंडल उपाध्यक्ष संजु लालाणी, तेयुप मंत्री भरत गोलछा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा ने गुरुदेव के प्रति अपने उद्गारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन रोहित बैद ने किया।

अक्षय तृतीया के विविध आयोजन

छापर

अक्षय तृतीया के ऐतिहासिक दिन के आयोजन पर शासनश्री मुनि विजय कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म के इतिहास में वैशाख शुक्ला तृतीया का दिन विशेष महत्त्व रखता है। इस दिन युग के आदि कर्ता प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने दान की परंपरा की प्रतिष्ठापना की थी। तब तक उस समय के लोग दान के स्वरूप से पूर्णतः अनभिज्ञ थे। ऋषभ ने लौकिक विद्याओं का युग को प्रशिक्षण देने के बाद लोकोत्तर विद्या का बोध देने के लिए साधना और तपस्या का पथ स्वीकार किया। मुनि ऋषभ भिक्षा के लिए घूमते पर लोग अनभिज्ञता के कारण हाथी, घोड़े, रत्न, आभूषण उनको भेंट करने के लिए लाते, रोटी जैसी सामान्य वस्तु की ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया। कहते हैं, इस तरह घूमते-घूमते एक वर्ष चालीस दिन बीत गए। एक रात ऋषभ के प्रपौत्र श्रेयांस कुमार को अमृत रस से मेरू पर्वत को सींचने का स्वप्न आया। वह स्वप्न के अर्थ का चिंतन कर रहा था। बस तभी उसने बाबा ऋषभ को महल की ओर आते हुए देखा और पूर्वजन्म की स्मृति होने से श्रेयांस ने नीचे उतरकर अपने स्वप्न के फलितार्थ के रूप में बाबा को भिक्षा लेने का निवेदन किया। इक्षुरस के १०८ घड़े भेंट स्वरूप आए हुए महल में पड़े थे। श्रेयांस ने रस बहराकर पात्र दान का लाभ लिया। दान की विशुद्ध परंपरा की उस दिन शुरुआत हुई।

आज भी हजारों भाई-बहन वर्षीतप करके इस दिन पारणा करते हैं व आचार्य–संत-संतियों की यथाशक्य सन्निधि प्राप्त करके पात्र दान का लाभ लेते हैं। इस बार सूरत में ११०० से अधिक पारणे युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में हो रहे हैं। एक नया कीर्तिमान घटित हो रहा है। यहाँ छापर से भी पारस देवी नाहटा, ३६वें वर्षीतप का पारणा करने सूरत गुरुदेव की सेवा में गई हैं। छापर में विराजित मुनि दिनकर जी, मुनि हेमराज जी, मुनि रमणीय कुमार जी, मुनि वर्षीतप की आराधना में लगे हुए हैं। मुनि दिनकर जी तो काफी समय से तेले-तेले तप में तपस्वियों को तन की मंगलकामना करते हैं। शासनश्री मुनिश्री ने गीत का संगान किया। मुनि आत्मानंद जी, मुनि हेमराजजी, मुनि रमणीय कुमार जी ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम महिला मंडल के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। रेखाराम गोदारा, चमन दुधोड़िया, जीवनमल मालू, प्रदीप सुराणा, मंजु दुधोड़िया, सुमन बैद, सपना बैद, पूर्वा, दीक्षिता, छाया, विनोद नाहटा, डूंगरगढ़ के विनोद गंग व निशांत गंग ने अपने भाषण व गीत के माध्यम से तपस्वी संतों की वर्धापना की। कार्यक्रम का संयोजन तेरापंथी सभा के प्रवक्ता प्रदीप सुराणा ने किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन में तेमम द्वारा वर्षीतप करने वाले तपस्वी भाई-बहन सुरेशचंद्र बोरदिया, सागरमल रांका, पुष्पा हिरण, सुशीला नौलखा, मैना बुरड़, विमला सिंघवी, लाड हिंगड़, जतन हिरण, मंजु नौलखा, ललिता पानगड़िया, कमला देवी आच्छा इन सभी को आमंत्रित करके तप अनुमोदना, अभिनंदन, चौबीसी एवं सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

तप सम्मान अभिनंदन के क्रम में टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, अणुव्रत विश्व भारती के उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, राष्ट्रीय सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने तपस्वी भाई-बहनों के प्रति आध्यात्मिक शुभकामनाएँ व्यक्त की। महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल ने तपस्वियों का अभिनंदन करते हुए उनके आध्यात्मिक गुणों का व्याख्या की।

तपस्वी साधक सुरेशचंद्र बोरदिया, साधिका लाड हिंगड़, मैना बुरड़ ने तप अनुभव सुनाते हुए आध्यात्मिक संदेश दिया।

तपस्वियों की अनुमोदना में काशीपुरी बहनों एवं बोरदिया परिवार ने अनुमोदना गीतिका की प्रस्तुति दी। तेमम की बहनों के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मंच संचालन मंत्री रेणु चोरड़िया ने किया। तपस्वी भाई-बहन के परिचय सत्र का संचालन सहमंत्री प्रेक्षा मेहता ने किया। कार्यक्रम में मैना कांठेड़, सुमन दुगड़, विनीता सुतरिया सभी का अच्छा सहयोग रहा। तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, मंत्री राजू कर्णावट, तेरापंथ सभा से कोषाध्यक्ष राजू सामसुखा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आनंदबाला टोडरवाल, अभिषेक कोठारी आदि की उपस्थिति रही।

तेमम की ओर से आभार प्रचार-प्रसार मंत्री नीलम लोढ़ा ने किया। मुंबई से समागत वर्षा बैद ने वूमेन फाउंडेशन द्वारा आयोजित नए दृष्टिकोण शिविर की जानकारी दी। कार्यक्रम सहयोगकर्ता सुरेशचंद्र संदीप बोरदिया परिवार देवरिया भीलवाड़ा रहे।

भीलवाड़ा

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी के सान्निध्य में वर्षीतप तपस्वी भाई-बहन की अनुमोदना के उपलक्ष्य में भजन संध्या का कार्यक्रम तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से मंत्री राजू कर्णावट ने की। सभी तपस्वी गण एवं समाज के पदाधिकारियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। मंच का संचालन संघ गायक कलाकार संदीप बोरडिया ने किया। सभी कलाकारों ने कार्यक्रम में तपस्वी भाई-बहनों का संगीत के माध्यम से तप अनुमोदना की एवं पूरे कार्यक्रम में संगीतमय माहौल बना दिया।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया ने सभी तपस्वी भाई-बहन का तप सम्मान अभिनंदन एवं सभी के प्रति आध्यात्मिक शुभकामना व्यक्त की।

तप अनुमोदना के इसी क्रम में अणुव्रत विश्व भारती के उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, सभा मंत्री योगेश चंडालिया, महिला मंडल की अध्यक्षा मीना बाबेल, मंत्री रेणु चोरड़िया, टीपीएफ अध्यक्ष करण सिंह, सिंघवी, आचार्य महाप्रज्ञ सेवा संस्थान बापू नगर के अध्यक्ष नरेश कोठारी, तेयुप उपाध्यक्ष प्रदीप आंचलिया सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

सिकंदराबाद

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव का आयोजन हुआ। कवाड़ीगुड़ा के हैबीटेट अलाइट के विशाल प्रांगण में साध्वीश्री जी ने कहा कि अक्षय तृतीया का दिन आनंद, शांति और शक्ति का त्योहार है। आदिनाथ भगवान ने प्रथम बार जनता को वीतराग दर्शन का उपदेश दिया। यह ऐतिहासिक त्योहार संपूर्ण जैन समाज को वरदान रूप में प्राप्त हुआ है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि ऋषभदेव ने असि, मसि और कृषि का उपदेश दिया। उन्होंने संन्यस्त होने के बाद अध्यात्म का उपदेश दिया। लाखों लोगों का उद्धार किया। इतिहास बताता है कि चार हजार लोगों ने भगवान ऋषभ के साथ दीक्षा स्वीकार की। साध्वीश्री जी ने कहा कि जीवन में मौन का अभ्यास अवश्य करें। उन्होंने कहा कि हम भाग्यशाली हैं, हमें भिक्षुशासन, तेरापंथ मिला है।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि साध्वी सुदर्शनप्रभा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने वर्षीतप सानंद संपन्न किया है। वे साधना पथ पर निरंतर बढ़ती रहें। सभी तपस्वियों ने साहस के साथ वर्षीतप की साधना की है। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने कहा कि गुरुशक्ति व्यक्ति को परम तक पहुँचाने वाली होती है।

हमारी तपस्या में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा विशेष सहयोगी बनी है। दोनों साध्वियों ने साध्वीश्री जी के प्रति आभार व्यक्त किया। साध्वी सिद्धियशा जी ने वर्षीतप आराधिका साध्वी चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी सुदर्शनप्रभा जी का परिचय प्रस्तुत किया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि प्रकृति की विषम स्थितियों में भी साध्वीद्वय की तपः साधना सानंद चली, इन्होंने चढ़ते भावों के साथ लक्षित मंजिल को पा लिया।

साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष बाबूलाल बैद, तेयुप के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, टीपीएफ के अध्यक्ष पंकज संचेती व महिला मंडल की अध्यक्षा अनिता गिड़िया ने सभी तपस्वियों का अभिनंदन एवं अनुमोदन किया।

किशोर मंडल एवं श्रावकों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। ऋषभ दुगड़ ने आगंतुक सभी का स्वागत किया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा मनमोहक झाँकी प्रस्तुत की गई। बैंगलोर से समागत साध्वी चैतन्यप्रभा जी के ज्ञातीजन एवं हैदराबाद प्रवासी एवं कलियागंज निवासी परिवारों के सदस्यों ने भावाभिव्यक्ति दी। ललित बैद ने महेंद्र लुणावत का परिचय दिया। बैद परिवार की बेटियों एवं बहुओं ने तपस्वी इचुदेवी का गीत से वर्धापन किया। वर्षीतप आराधिका सरोज मुसरफ का स्वागत परिचय उपासिका मंजु दुगड़ ने किया। तेमम की निवर्तमान व वर्तमान अध्यक्षाओं ने दोनों का सम्मान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी के ज्ञातिजनों ने तप-अनुमोदना स्वर प्रस्तुत किए। जयपुर से समागत गौरव सेठिया ने विचार व्यक्त किए। युवती बहनों ने पपेट शो की अभिव्यक्ति दी।

बिमल पुगलिया ने आभार व्यक्त किया। साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

राजलदेसर

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम आयोजित किया गया। वर्षीतप का पारणा करने वाली चार बहनें–राजू देवी संचेती, चांदरतन देवी धाड़ेवा, शर्मिला बैद एवं बबीता कुंडलिया साध्वीश्री जी के सान्निध्य में उपस्थित थीं। मंजु देवी बाफना ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

भगवान ऋषभ के जीवन से जुड़ा अक्षय तृतीया का पर्व हमें प्रेरणा देता है–सुपात्र दान की। ऋषभ कौन थे? अक्षय तृतीया क्यों मनाते हैं? आदि विषय का साध्वीश्री जी ने रोचक शैली में प्रतिपादन किया। साध्वीश्री द्वारा वर्षीतप अनुमोदना गीत के सरस संगान से वातावरण संगीतमय बन गया।

इस अवसर पर साध्वीवृंद द्वारा 'ऋषभ की कहानी हमानी जुबानी' कार्यक्रम ने समा बांध दिया। वर्षीतप अभिनंदन में महिला मंडल अध्यक्षा प्रेमदेवी विनायकिया, तेयुप अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल, पवन बोथरा, भिक्षु भजन मंडली, खुशबू कुंडलिया आदि ने वक्तव्य एवं गीत द्वारा तप आराधिकाओं का अभिनंदन किया।

वर्षीतप आराधिकाओं के पारिवारिक सदस्यों ने भी तप अनुमोदना में सामुहिक गीत, वक्तव्य, कविता आदि के द्वारा अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथी सभा, तेमम, तेयुप, पन्नालाल बैद, सुभाष संचेती द्वारा वर्षीतप करने वाली बहनों का प्रशस्ति पत्र, मोमेंटा व साहित्य भेंट कर अभिनंदन व सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी इंदुयशा जी द्वारा किया गया।

मुमुक्षु भाई आशीष एवं मुमुक्षु बहन अंकिता का सम्मान समारोह

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में मुमुक्षु दीक्षार्थी भाई आशीष बालड़ एवं मुमुक्षु दीक्षार्थी बहन अंकिता श्रीश्रीमाल का सम्मान समारोह रखा गया। तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला के बच्चों ने नमस्कार महामंत्र से किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक कुमार जीरावला ने मुमुक्षु भाई-बहन का संक्षिप्त में परिचय दिया।

तेमम द्वारा गीतिका, तेरापंथ सभा निवर्तमान अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा नैना पारख, तेयुप अध्यक्ष जीतेंद्र चोपड़ा, तेरापंथ ट्रस्ट निवर्तमान अध्यक्ष निर्मल कुमार पारख, तेमम मंत्री दीपिका फुलफगर, श्री सुमतिनाथ जैन नया मंदिर के ट्रस्टी मूलचंद श्रीश्रीमाल, तेयुप सदस्य अमृतलाल चोपड़ा, निष्ठा श्रीश्रीमाल आदि ने मुमुक्षु भाई-बहन के संयममय पथ पर अग्रसर होने के लिए मंगलकामना करते हुए उनके माता-पिता को धन्यवाद दिया। जिन्होंने उनको दीक्षा की आज्ञा प्रदान की।

मुमुक्षु भाई आशीष के बड़े पापा चंदनमल बालड़ एवं मुमुक्षु बहन अंकिता के पिता ललित कुमार जैन ने मुमुक्षु के दीक्षा पर आने हेतु श्री संघ को आमंत्रित किया। मुमुक्षु भाई-बहन का तेरापंथ सभा की तरफ से तिलक, माला, जैन दुपट्टा, मोमेंटो, साफा द्वारा सम्मान किया गया। 'ॐ अर्हम्' की ध्वनि से उपस्थित सभी भाई-बहनों ने मुमुक्षु भाई-बहन के प्रति मंगलकामना की।

✦ दुर्लभ मानव जन्म का उपयोग परोपकार और सत्कार्यों में करें।
—आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ आचार्य तुलसी ❑

एकत्व भावना

आदमी अपने बाहरी वातावरण में अकेला नहीं है। वह सामुदायिक जीवन जीता है और सबके बीच में रहता है किंतु वह सब बातों में सामुदायिक नहीं है। सामुदायिक जीवन के प्रवाह से आने वाली समस्याओं से अपने मन को खाली वही रख सकता है, जिसे व्यावहारिक संबंधों के बीच अपने अस्तित्व की अनुभूति होती है। जिसे अपने स्वतंत्र अस्तित्व की अनुभूति होती है, वह बाहरी समस्याओं का सामना करते हुए भी अपने अंतस् में समस्या से मुक्त रहता है। बाहर के वातावरण में समुदाय के बीच में रहते हुए भी वह अंतस् में अकेला रहता है और बाहरी जीवन में व्यस्त रहते हुए भी अंतस् में व्यस्तता से मुक्त रहता है।

अन्यत्व (विवेक) भावना

मनुष्य का सबसे निकट संबंध शरीर से होता है। शरीर और आत्मा में भेदानुभूति नहीं होती। जो शरीर है वह मैं हूँ, और जो मैं हूँ वह शरीर है—इस अभेदानुभूति के आधार पर ही मनुष्य के ममत्व का विस्तार होता है। सम्यक् दर्शन का मूल अन्यत्व भावना है। इसे विवेक भावना या भेदज्ञान भी कहा जाता है। शरीर और आत्मा की भिन्नता की भावना पुष्ट होने पर मोह की ग्रंथि खुल जाती है। सहज ही मन स्थिर हो जाता है। इसीलिए पूज्यपाद ने इस भावना को तत्त्वसंग्रह कहा है—जीवोऽन्यः पुद्गलश्चान्यः इत्यसौ तत्त्वसंग्रहः।

अशौच भावना

पुद्गलों के बाहरी संस्थान का सौंदर्य देखकर उनमें मन आसक्त हो जाता है। चमड़ी के भीतर जो है, वह आकर्षक नहीं है। बाहरी संस्थान के साथ आंतरिक वस्तुओं का बोध करना—उन्हें साक्षात् देखना अनासक्ति का हेतु है। प्राणी के शरीर में रहने वाले अशुचि पदार्थ, मृत शरीर की दुर्गन्ध आदि का योग होने पर मूर्च्छा का भाव क्षीण हो जाता है।

आस्रव-संवर भावना

बाहर से कुछ लेना, उसे संचित करना, उससे प्रभावित होना और उसके अनुरूप अपने आपको ढालना—ये सब आश्रव की प्रक्रियाएँ हैं। यही मानसिक चंचलता की प्रक्रिया है। संवर की क्रिया इसकी प्रतिपक्ष है। बाहर से कुछ भी लिया नहीं जाएगा तो उससे प्रभावित होने की परिस्थिति ही उत्पन्न नहीं होगी। इस स्थिति में मानसिक स्थिरता अपने आप हो जाती है।

निर्जरा भावना

विजातीय द्रव्य संचित होता है तब शरीर अस्वस्थ बनता है। उसके निकल जाने पर शरीर स्वयं स्वस्थ बन जाता है। बाहरी संचय का निर्जरण होने पर मानसिक चंचलता के हेतु अपने आप समाप्त हो जाते हैं। निर्जरा का हेतु तपस्या है। जो साधक तपस्या का अर्थ नहीं जानता, वह ध्यान का मर्म नहीं जान सकता।

धर्म भावना

धर्म आत्मा का सहज परिणमन है। निमित्त मिलता है, क्रोध उभर आता है किंतु कोई भी आदमी प्रतिक्षण क्रोध नहीं करता और कर भी नहीं सकता। क्षमा प्रतिक्षण की जा सकती है क्योंकि वह उसका सहज रूप है।

ऋजुता हर क्षण में हो सकती है किंतु माया का आचरण हर क्षण में नहीं होता। धर्म की भावना का अर्थ है—आत्मा के स्वाभाविक रूप की खोज करना। इसमें इंद्रियाँ अंतर्मुखी हो जाती हैं और मन अपने अस्तित्व के मूल प्रवाह में विलीन हो जाता है।

लोक-संस्थान भावना

यह लोक विविधताओं की रंगभूमि है। इसमें अनेक संस्थान और अनेक परिणमन हैं। उन सबमें एकत्व या समत्व की अनुभूति कर घृणा, अभिमान और हीन भावना पर विजय पाई जा सकती है। समत्व की साधना के लिए इस भावना के अभ्यास का बहुत महत्त्व है।

बोधिदुर्लभ भावना

बोधि के तीन प्रकार हैं—ज्ञानबोधि, दर्शनबोधि और चारित्रबोधि। सहजतया मनुष्य का आकर्षण ऐश्वर्य और सुख-सुविधा में होता है, किंतु वे ही दुःख के हेतु बनते हैं, इस स्थिति को मनुष्य भुला देता है। प्रस्तुत भावना में मनुष्य के सम्मुख एक प्रश्न उपस्थित होता है। इस जगत में दुर्लभ क्या है? धन-संपदा और सुख-सुविधा वस्तुतः दुर्लभ नहीं हैं। दुर्लभ है मानसिक शांति। वह धन-संपदा और सुख-सुविधा से प्राप्त नहीं होती किंतु सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दृष्टिकोण और सम्यग्चारित्र के द्वारा प्राप्त होती है।

मन की शांति का हेतु बोधि है। कारण प्राप्त होने पर कार्य की सिद्धि सहज हो जाती है। बोधि प्राप्त होने पर मन की शांति का प्रश्न जटिल नहीं होता।

दूसरे वर्गीकरण में चार भावनाओं का उल्लेख है—(१) मैत्री, (२) प्रमोद, (३) कारुण्य, (४) माध्यस्थ।

मैत्री भावना

पैर में काँटा चुभा हुआ है। सर्दी की रात है। उसकी चुभन बरबस ध्यान खींच लेती है। शत्रुता भी एक काँटा है। स्मृति उनके लिए सर्दी की रात है। जब-जब स्मृति आती है, तब-तब मानसिक चुभन प्रखर हो उठती है। दूसरे को शत्रु मानने वाला, जिसको वह शत्रु मानता है, उसका अनिष्ट कर पाता है या नहीं कर पाता किंतु अपना अनिष्ट अवश्य कर लेता है। मैत्री की भावना का यह प्रबल आधार है। शत्रु की याद आते ही मानसिक प्रसन्नता विषाद में बदल जाती है। इसलिए समझदार व्यक्ति किसी को शत्रु मानकर अपने मन को कलुषता के दलदल में कैसे फाँसना चाहेगा?

सबके प्रति आत्मीय या पारिवारिक भावना होने पर मन प्रफुल्ल रहता है। उसे किसी से भी भय नहीं होता। शत्रुता और भय, मैत्री और अभय—ये दो युगल हैं। जिसका मन भय से भरा होता है, वही दूसरे को शत्रु मानता है। जिसके मन में भय नहीं होता, वह अनिष्ट करने वाले को अज्ञानी मान सकता है किंतु शत्रु नहीं मानता। सब जीवों के हित-चिंतन का बार-बार अभ्यास करने से मैत्री का संस्कार पुष्ट होता है।

प्रमोद भावना

ईर्ष्या उस व्यक्ति के मन में पैदा होती है जिसे आत्मिक समानता में विश्वास नहीं होता। जो मानता है कि हर आत्मा समान है, हर आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत आनंद और अनंत शक्ति है, हर आत्मा को विकास करने का अधिकार है और हर आत्मा उसका विकास कर सकती है, वह व्यक्ति दूसरे का विकास देखकर ईर्ष्यालु नहीं होता किंतु प्रसन्न होता है। ईर्ष्या नास्तिकता का चिह्न है। क्या आत्म-निष्ठ व्यक्ति आत्म-विकास पर एकाधिकार मान सकता है?

दूसरे के विकास को नकारने का अर्थ गुणों की श्रेष्ठता को नकारना है। यदि गुणों की अच्छाई में हमारा विश्वास है तो वे किसी में भी प्रकट हुए हों, हमारे लिए अभिनंदनीय हैं। इस चिंतन की पुष्टि से मानसिक हर्ष निश्छिद्र और अव्यवच्छिन्न बन जाता है।

कारुण्य भावना

सुदूर क्षितिज मे बिजली का कौंधना देखकर हमें बादलों के अस्तित्व का बोध हो जाता है। इसी प्रकार अंतःकरण में करुणा का प्रवाह देखकर हम जान पाते हैं कि अमुक व्यक्ति में सत्य की जिज्ञासा है। उसे सत्य का कुछ साक्षात् हुआ है और उसका दृष्टिकोण समीचीन है। क्रूरता का विसर्जन किए बिना कोई भी आदमी सत्य की दिशा में गतिशील नहीं हो सकता। इस अनुभूति की तीव्रता के द्वारा मनुष्य में करुणा का संस्कार सुदृढ़ हो जाता है।

माध्यस्थ्य भावना

किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति अनुरक्त होने और उससे भिन्न वस्तु या व्यक्ति के प्रति द्विष्ट होने का अर्थ पक्षपात है। पक्षपात यानी विषमता। राग और द्वेष से होने वाले अन्याय के परिणामों को समझे बिना क्या कोई भी व्यक्ति मानसिक झुकाव से बच सकता है?

कोई व्यक्ति उन्मार्ग की ओर जा रहा है। उसे सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना कर्तव्य है किंतु बल-प्रयोग के द्वारा उस कर्तव्य की पालना नहीं हो सकती। हृदय-परिवर्तन का प्रयत्न करने पर भी यदि सामने वाला व्यक्ति उन्मार्ग से विमुख नहीं होता तो उसके लिए प्रतीक्षा ही की जा सकती है किंतु क्रोध करके अपने मन को धूमिल और परिस्थिति को जटिल बनाना समुचित नहीं हो सकता। उलझन-भरी परिस्थिति व वातावरण में अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखने का अभ्यास करने, न्याय के प्रति दृढ़ निष्ठा होने तथा हृदय-परिवर्तन के सिद्धांत मे आस्था होने से मध्यस्थता का संस्कार सुस्थिर होता है।

कषाय

क्रोध, अभिमान, माया और लोभ—इन चारों को एक शब्द में कषाय कहा जाता है। इनके द्वारा मन रंजित होता है—अपनी सहज साम्यपूर्ण स्थिति को खोकर इनके रंग में रंग जाता है। इसलिए इन्हें कषाय कहना सर्वथा उपयुक्त है। कषाय के द्वारा मानवीय गुण विनष्ट होते हैं। जैसे—

(१) क्रोध से प्रेम, (२) अभिमान से विनय, (३) माया से मैत्री, (४) लोभ से सर्वगुण।

इन्हें बल-प्रयोग से नहीं मिटाया जा सकता। इन पर विजय पाने के लिए प्रतिपक्ष भावना का आलंबन लेना उपयोगी होता है। उपशम (शांति) की भावना को पुष्ट करने—उपशम के विचार को बार-बार दोहराने से क्रोध सहज ही नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार मृदुता की भावना को पुष्ट करने से अभिमान, ऋजुता की भावना को पुष्ट करने से माया और संतोष की भावना को पुष्ट करने से लोभ सहज ही विनष्ट हो जाता है।

भावना का अभ्यास निम्न निर्दिष्ट प्रक्रिया से करना इष्ट-सिद्धि में अधिक सहायक हो सकता है। साधक पद्मासन आदि किसी सुविधाजनक आसन पर बैठ जाए। पहले श्वास को शिथिल करे। फिर मन को शिथिल करे। पाँच मिनट तक उन्हें शिथिल करने के लिए सूचना देता जाए। वे जब शिथिल हो जाएँ तब उपशम आदि पर मन को एकाग्र करे। इस प्रकार निरंतर आधा घंटा तक अभ्यास करने से पुराने संस्कार विलीन हो जाते हैं और नए संस्कारों का निर्माण होता है। इस प्रकार का अभ्यास वैयक्तिक रूप में भी किया जा सकता है और सामूहिक रूप में भी कराया जा सकता है।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(८) **लब्ध्वा मनुष्यतां धर्मं, शृणुयाच्छ्रद्दधीत यः।**
वीर्यं स च समासाद्य, धुनीयाद् दुःखमर्जितम्।।

धर्म-श्रुति

(क्रमशः) धर्म का श्रवण और भी दुर्लभ है। मनुष्य जीवन एक सांयोगिक घटना भी हो सकती है, किंतु यह कुछ प्रयत्न साध्य है। जीवन के समस्त संस्कार एक पथगामी रहे हैं। धर्म-श्रवण–यह एक दूसरा आयाम है। धर्म के नए संस्कार को उद्‌भुत करने में पुराने संस्कार चट्टानों का काम करते हैं। वे सदा से प्रिय रहे हैं और यह सर्वथा अनजाना, अप्रिय और रसहीन। इंद्रियों के संस्कार पुनः-पुनः अपनी ओर खींचते रहते हैं। आचार्य कुंदकुद ने समयसार में लिखा है–कामभोग से संबंधित बातें सबकी सुनी हुई हैं, परिचित हैं और अनुभूत हैं, लेकिन भिन्न आत्मा का एकत्व न श्रुत है, न परिचित है और न अनुभूत है, इसलिए वह सुलभ नहीं है।

धर्म का अर्थ है–स्वभाव। स्वभाव का स्वाद जिसने चखा है, वहीं स्वभाव की सुगंध मिल सकती है। जिसने स्वभाव में डूबने का प्रयास भी नहीं किया, वहाँ स्वभाव की बात हो सकती है किंतु जीवंत दर्शन नहीं। कहा है कि **'अप्रियस्य च सत्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभः'** ऐसे वक्ता और श्रोता का मिलना संभव नहीं, किंतु कठिन है, जो अप्रिय सत्य कहने में न हिचकता हो।

धर्म-श्रवण यात्रा-प्रारंभ का केंद्र है। श्रवण पर सबने बल दिया है। **'श्रोतव्यः, मन्तव्यः निदिध्यासितव्यः'** में श्रवण का स्थान प्रथम है। सुने बिना मनन किसका करे और किस पर चले। महावीर ने कहा है–अक्रिया (मुक्ति) का प्रथम द्वार है–श्रवण। सुनना क्या है? वही नहीं जो परिचित, पुनः-पुनः सुना गया हो। इंद्रियों का रस बार-बार उन्हीं को दोहराने में है जो किया गया है। वैराग्य उसी को कहा है–दृष्ट, अनुश्रुत आदि विषयों का वितृष्ण हो जाना। अब उन्हें न दोहराकर नई दिशा में इंद्रियों की प्रतिष्ठा करना, सुनने का एक नया द्वार खोलना, अश्रव्य की बात सुनना। धर्म-कथा का अभिप्राय यही है कि जो समस्त इंद्रियों और मन से परे हैं, उसका श्रवण करना। उसके बोध से ही जीवन की सकल ग्रंथियाँ टूटती हैं।

गुरु नानक साहब ने श्रवण की महिमा जपुजी में गाई है–सुनने से दुःख–पाप का नाश होता है। सुनने से योग, मुक्ति, शरीर-भेद, शाश्वत का ज्ञान होता है। सुनने से अड़सठ तीर्थों का स्नान होता है।

श्रद्धा

यह तीसरा तत्त्व है। श्रद्धा शब्द से यहाँ अभिप्रेत है–विश्वास, तैयारी, आकांक्षा। धर्म को सुना और वह प्रीतिकर लगा। किंतु श्रद्धा आचरण की पूर्व तैयारी है। वर्षा से पूर्व किसान जैसे खेत को बीज बोने योग्य कर लेता है, वैसे ही **'सद्दहामि, पत्तियामि, रोएमि'**–ये जीवन विकास के सूत्र हैं। उनके अभाव में जीवन सरस, सुखद, स्वच्छ औरशांतिमय नहीं हो सकता। साधक कहता है–मैं श्रद्धा करता हूँ, प्रतीति करता हूँ और रुचिकर मानता हूँ।' वह उन्हें देखता भी है जिन्होंने प्रत्यक्ष ऐसा जीवन जीया है और वे उस आनंद के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। उसका मन आकांक्षा से भर जाता है कि निश्चित ही मैं भी इस मार्ग का अनुसरण कर इस दिशा को प्राप्त हो सकूँगा। जो फूल महावीर, बुद्ध और संतों में खिला, वह मेरे भीतर भी खिल सकता है, नहीं खिलने का कोई कारण नहीं है। कमर कसकर वह तत्पर हो जाता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

कर्म बोध

प्रकृति व करण

प्रश्न ७ : आयुष्य कर्म बंध के क्या कारण हैं?

उत्तर : नरकायु बंध के चार कारण हैं–
(१) महाआरंभ, (२) महापरिग्रह, (३) पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा, (४) मांस-भक्षण।

तिर्यंचायु बंध के चार कारण हैं–(१) माया, (२) गूढ़ माया–एक माया को ढ़कने दूसरी माया करना, (३) असत्य वचन, (४) कूट तोल-कूट माप।

मनुष्यायु बंध के चार कारण हैं–(१) सरल प्रकृति होना, (२) विनीत प्रकृति होना, (३) अनुकंपा के भाव होना, (४) ईर्ष्या न करना।

देवायु बंध के चार कारण हैं–(१) सराग संयम का पालन, (२) श्रावकत्व का पालन, (३) बाल (मिथ्यात्वी) तपस्या, (४) अकाम निर्जरा।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

श्रावक श्री बहादुरमलजी भंडारी

भंडारीजी ने घुड़सवार भेजने तथा जयाचार्य को पकड़ने के आदेश पर सीधी बातचीत करते हुए कहा–"आपको किसी ने असत्य सूचना दी है। आचार्य जीतमलजी मेरे गुरु हैं। उनके विषय में मैं विश्वास दिला सकता हूँ कि वे बिना आज्ञा के किसी को दीक्षित नहीं करते। आप नरेश हैं। शिकायत आने पर आपको जाँच कर लेनी चाहिए थी। सीधा पकड़ने का आदेश देकर तो एक समस्या को और निमंत्रण दिया गया है। लाखों मनुष्य उनके भक्त हैं। अवश्य ही वे उनकी सुरक्षा की व्यवस्था करेंगे। आवश्यक होने पर प्राण निछावर करने में भी नहीं हिचकिचाएँगे। उस जनमेदिनी के सम्मुख आपके दस घुड़सवार क्या टिक पाएँगे? असफलता तो इसमें मिलेगी ही, किंतु अनावश्यक ही एक पूरा समाज राज्य-विरोधी हो जाएगा।"

नरेश चिंतित हुए। समग्र विषय के रहस्य तक पहुँचते हुए उन्होंने कहा–"हमने तो किसी साधारण संन्यासी की घटना समझा था। वे तुम्हारे गुरु हैं तथा प्रभावशाली जैनाचार्य हैं, इसका हमें कोई पता नहीं था। उक्त शिकायत के पीछे किसी षड्‌यंत्रकारी के हाथ भी हो सकते हैं, यह हमने ध्यान नहीं दिया।" नरेश ने व्यग्रतापूर्वक पूछा–'जो किया जा चुका है, उसे सुधारने के लिए अब हमें क्या करना चाहिए?'

भंडारी जी ने कहा–'पूर्व आदेश-पत्र को रद्द करते हुए आप दूसरा आदेश-पत्र लिख दीजिए। मैं किसनमल को भेज देता हूँ। आप कुछ घुड़सवारों को उसके नेतृत्व में भेजने की कृपा करिए। उन्हें आदेश दीजिए कि पहले गए हुए घुड़सवारों को नया आदेश-पत्र दिखलाकर मार्ग से वापस लौटा लाएँ।' नरेश ने उसी समय स्याही और कलम मँगाई। भंडारी जी के कथनानुसार नया आदेश-पत्र लिखा। घुड़सवारों के नए दल को किसनमलजी के नेतृत्व में जाने का आदेश दिया। इतना कार्य पूरा कर लेने के पश्चात् नरेश से आज्ञा लेकर भंडारीजी राजमहल से वापस लौटे। उन्होंने बड़े पुत्र किसनमलजी को आदेश-पत्र देकर सारी स्थिति समझाई और घुड़सवारों के दूसरे दल का नेतृत्व करने के लिए भेज दिया। पूरा दल घोड़ों पर सवार होकर जब वहाँ से प्रस्थान कर गया, तब कहीं भंडारीजी ने सुख की साँस ली।

किसनमलजी के दल को घुड़सवारों के लाडनूं पहुँचने से पूर्व ही उन तक पहुँचना था, अतः विश्राम आदि की अधिक चिंता न कर वे चलते ही रहे। घुड़सवारों के प्रथम दल को इतनी कोई शीघ्रता नहीं थी। वे आनंदपूर्वक विश्राम करते हुए मंजिलें काटते जा रहे थे। मार्ग के एक ग्राम में उनमें से किसी एक के परिचित परिवार में शादी थी, उसमें सम्मिलित होने के लिए वे वहाँ एक दिन रुक भी गए। इन सभी परिस्थितियों ने ऐसा सहयोग दिया कि किसनमलजी लाडनूं से काफी पहले ही उनके पास पहुँच गए। उन्होंने नरेश का नया आदेश-पत्र दिखलाकर उन सबको वहीं से वापस लौटा दिया। किसनमलजी ने अपने दल के साथ लाडनूं जाकर जयाचार्य के दर्शन करने का निश्चय किया।

नरेश के प्रथम आदेश के समाचार लाडनूं पहुँच चुके थे। वहाँ के श्रावक समाज में एक अपूर्व हलचल मच गई। सुरक्षा की व्यवस्था के लिए विचार-विमर्श हुआ। दूलीचंदजी दुगड़ ने उस व्यवस्था का भार अपने पर लिया। जयाचार्य को वे सुरक्षा की दृष्टि से विराजने के लिए अपनी हवेली में ले गए। आचार्यश्री अनाकुल और अविचल थे। स्थिति का सामना करने के लिए उनके अपने सात्त्विक उपाय थे। श्रावकों को भी उन्होंने विक्षुब्ध न होने को कहा, परंतु स्थितियों के दबाव का सामना वे भिन्न प्रकार से करने के अभ्यस्त थे। दोनों ने अपने-अपने प्रकार की पूरी तैयारी कर ली। हवेली की ओर जाने वाले सभी मार्गों की पूरी मोर्चाबंदी के साथ लोगों की टोलियाँ एकत्रित हो गईं। स्थानीय मोहिल राजपूतों का भी सहयोग लिया गया। उनमें अनेक तो दूलीचंदजी के मित्र थे। हवेली के दरवाजे पर वे प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने को उद्यत थे। दूलीचंदजी की अपनी टोली मकान के अंदर जयाचार्य के आस-पास थी। उन सबका निश्चय था कि हमारे शरीर में प्राण रहेंगे तब तक जयाचार्य का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 मई, 2023

✦ *चोरी करना तो एक प्रकार की हिंसा है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री जी के मनोनयन दिवस पर विशेष

ध्रुवयोगसाधिका साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

❐ साध्वी अक्षयप्रभा ❐

एक मित्र अपने प्रिय मित्र से कहता है—"अपनी मित्रता स्थायित्व को प्राप्त करेगी, यदि आप हमेशा सत्य बोलोगे। जिस दिन आप असत्य का सहारा लोगे, असत्य बोलोगे, अपनी मित्रता दूध-पानी की तरह अलग-अलग हो जाएगी, टूट जाएगी।" विश्व में हर व्यक्ति की अपनी खुद की चाह है—सत्य। जीवन में अनिवार्यतम तत्त्व सत्य है। वह जीवन की अनिवार्य माँग है। सत्य दर्शन की अदम्य, लालसा एवं दुःखमुक्ति की गहरी आशा से व्यक्ति साधना की दिशा में चरण धरता है। सम्यक् साधना से महावीरत्व की ओर अग्रसर होता है। लाडनूं की लाडेसर, मोदी कुल उजियारी मुमुक्षु स्मिता भी अहिंसा, संयम के महापथ पर प्रणत होने तत्पर हुई। स्मिता से स्मितप्रज्ञा फिर विश्रुतविभा मुख्य नियोजिका और आज तेरापंथ धर्मसंघ की नवम् साध्वीप्रमुखा के रूप में हमारे सामने है।

उत्तराध्ययन सूत्र की वृत्ति में चारित्र को परिभाषित करते हुए कहा है—'चयरितकरं चारित्तम्' अर्थात् पूर्वबद्ध कर्मों के समूह को तप, ध्यान आदि के द्वारा जो रिक्त करता है, वह चारित्र है। नवम् साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी एक ऐसी ही विरल आत्मा का नाम है जिन्होंने 'अत्तहियट्ठयाए' आत्महित के लिए, सर्वविरति के लिए अपने आपको वीर वचनों के प्रति सर्वात्मना समर्पित किया। उनकी विलक्षण मेधा ने जाना कि चारित्र की अनुपालना के लिए, आत्म उन्नति के लिए मानसिक हिंसा भी खतरनाक है। अतः अशुभ भावों के अंधकार को दूर करने, आत्मा एवं शरीर की भिन्नता रूप भेद, विज्ञान का दीप जलाने के लिए महासाधिका साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी प्रतिक्षण सावधान है।

संसार का हर प्राणी जीवन जीता है, मगर जीने जीने में बहुत अंतर होता है। महत्त्वपूर्ण बात है कौन कैसा जीवन जीता है। साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन का क्षण-क्षण उद्देश्यपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है—"लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो। हर समय उसी का चिंतन करो, उसी का स्वप्न देखो और उसी के सहारे जीवित रहो।" अप्रमत्त चेतना की धनी प्रमुखाश्रीजी खाते-पीते, सोते-उठते हर समय अपने लक्ष्य अस्तित्व की अनुभूति, वीतरागता का अनुभव—इन सबके पति जागरूक दिखाई देते हैं। आपका आचार, व्यवहार एवं जीवनशैली अनुपम है। आपकी साधना के अनेक रूप हैं पर साध्य एक ही है—निज से निज का साक्षात्कार। इसलिए ही जैन साधना के अनेक आयाम आपकी दिनचर्या के प्रमुख अंग बने हुए हैं।

ध्रुवयोगसाधिका

गतमोहाधिकाराणां,
आत्मनमधिकृत्यया।
प्रवर्तते क्रिया शुद्धा,
तदध्यात्मं जगुर्जिनाः।।

जैन शासन के यशस्वी उपाध्याय यशोविजयजी के 'अध्यात्मसार' ग्रंथ में जिनभाषित अध्यात्म की यह सुंदर परिभाषा 'शुद्ध क्रिया ही अध्यात्म है'—आपके जीवन में पग-पग पर परिलक्षित हो रही है। भावनापूर्वक आगमानुसार आत्मचिंतन करना अध्यात्म साधना है। अध्यात्म साधना से पापकर्म क्षीण होते हैं, पुरुषार्थ का अकर्ष होता है तथा चित्त में समाधि की प्राप्ति होती है।

'संजमधुवजोग जुत्ते' इस आगम वाक्य के अनुसार अध्यात्म की योग भूमिका को पुष्ट करने के लिए, चारित्रशील जीवन निर्माण के लिए गुरुदेव तुलसी ने ध्रुवयोग का एक विशेष प्रयोग साधु-साध्वियों को लक्षित कर बताया—

प्रतिक्रमण प्रतिलेखन अर्हत् वंदना,
योगासन स्वाध्याय ध्यान अभिवंदना।
अथवा कायोत्सर्ग नियत जप-योग हों,
ये सातों ध्रुवयोग अमल उपयोग हों।।

अवश्य करणीय कार्यों को नियमित रूप से करने वाला ध्रुवयोगी कहलाता है। चूर्णिकार जिनदास महत्तर ने हर क्षण जागरूक, प्रतिलेखन आदि कार्यों को नियमित रूप से करने वाला, मन-वचन-काय की प्रवृत्ति को सावधान होकर करने वाला तथा पाँच प्रकार के स्वाध्याय में रत साधु को ध्रुवयोगी कहा है। (दसवे० जि०चू० पृ० ३४) तेरापंथ शासन की नवम् साध्वीप्रमुखा उत्तम अध्यात्म की आराधना करने, चारित्राचार की निर्मलता के लिए ध्रुवयोग की साधना को अपने प्रायोगिक जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान देती हुई प्रतिक्षण नजर आती है।

निर्ग्रन्थ की दैनंदिन चर्या का अवश्य करणीय आध्यात्मिक अनुष्ठान प्रतिक्रमण को भी इतने लंबे-लंबे विहारों के बावजूद भी आप विधिपूर्वक करते हैं। दोनों समय प्रतिक्रमण करते समय आपकी भावक्रिया, प्रतिक्रमण के विशेष अंगों की अनुपालना सबके भीतर नई प्रेरणा का अनुसंचार करने वाली होती है। आपका प्रतिक्रमण 'तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे' इस उत्तराध्ययन की वाणी को चरितार्थ करता हुआ दिखाई देता है। वह आपको एक विशिष्ट योगाधिकारिणी के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

प्रतिलेखन भी एक शास्त्रीय अनुष्ठान है। षट्जीवनिकाय की रक्षा हेतु आपका प्रतिलेखन पूर्ण जागरूकता के साथ होता है।

आर्ष सूक्तों से संकलित अर्हत् वंदना का संगान करते समय भी आपकी एकाग्रता व तन्मयता सबके लिए प्रेरणास्पद बनती है। हम सबको भी इस ध्रुवयोग में सजग रहने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

शरीर को साधना के अनुकूल बनाने एवं कायक्लेश तप के द्वारा कर्मों का निर्जरण हेतु योगासन भी आपकी साधना का सहज अंग बना हुआ है।

साधना से सिद्धि के प्रसाद तक पहुँचने हेतु आपकी स्वाध्यायप्रियता भी सबके आकर्षण का हेतु बन रही है। सुबह-सुबह नियमित रूप से स्वाध्याय आपका रोजाना का क्रम है। लगता है श्रुत की इस लगाम के द्वारा ही आपने अपने मन की लगाम पर भी नियंत्रण कर लिया है।

आपकी हर क्रिया ध्यान-योगमय है। इस ध्यान चेतना से ही आपने आचार्य महाप्रज्ञ के 'रहे भीतर जीए बाहर' इस आध्यात्मिक सूत्र को चरितार्थ किया है। मन में अध्यात्म-मानसिक ध्यान, वचन में अध्यात्म-वाचिक ध्यान, काय में अध्यात्म-कायिक ध्यान—इस ध्यानत्रयी से 'समणोऽहं' का अंतर्नाद आपके भीतर गूँजता रहता है।

"आध्यात्मिक यात्रा को निर्बाध करने के लिए, साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए तथा अंतर्जगत में प्रवेश करने के लिए पहली प्रक्रिया है—'जप'। गुरु तुलसी के ये शब्द आपकी व्यक्तिगत साधना में मुखर हो रहे हैं। आस्था, एकाग्रता व निरंतरता से आप्लावित आपकी जप साधना आश्चर्यकारी है। इतने व्यस्त समय में भी जप कार्य में आपकी नियमितता सबको टाइम मैनेजमेंट का पाठ पढ़ा रही है।

संन्यास तेजस्वी कैसे बने? अध्यात्म तेजस्वी कैसे बने? उत्तर है—ध्रुवयोगों की साधना से। हे साध्वीप्रमुखे! आपने अपने आसपास अप्रमाद के सिपाही को खड़ा रखा है। फलस्वरूप आपकी ध्रुवयोगों की साधना निर्बाध चल रही है। इसी से ही आपका संन्यास, आपका अध्यात्म तेजस्विता की ओर अग्रसर है। ध्रुवयोगों की साधना से उत्तम अध्यात्म की आराधना करते हुए आप निरंतर लक्षित मंजिल की ओर अग्रसर हैं।

— साध्वाचार की सुदृढ़ता से अनुपम दर्शनाचार की आराधना करते हुए आप संन्यास को सिद्ध कर रहे हैं।

— मन-वचन-काय गुप्ति रूप उत्तम अध्यात्म से अनुपम चारित्राचार की आराधना करते हुए आप संन्यास को सिद्ध कर रहे हैं।

प्रथम चयन दिवस पर 'ध्रुवयोग साधिका' के रूप में, मैं आपकी अभ्यर्थना कर रही हूँ। मुझे भी आपसे ऐसा आशीर्वर मिले कि मेरी भी ध्रुवयोगों की अखंड साधना अनवरत चलती रहे।

विभूतिसंपन्न साधिका

श्रीकृष्ण कहते हैं—स्त्रियों में मेरी सात विभूतियाँ सन्निहित हैं—'कीर्तिः श्रीवीक् च नारीणां, स्मृतिमेधा धृतिः क्षमा' (गीता)।

आध्यात्मिक अभिरुचि की प्रतीक कीर्ति आपकी चरित्रनिष्ठा से स्वतः ही चारों ओर फैल रही है।

श्री का अर्थ लक्ष्मी, सुंदरता है, आप तन से भी सुंदर हैं और मन से भी सुंदर हैं एवं आपका अध्यात्म भी सुंदरतम है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तपरूपी लक्ष्मी आपकी सहज सहचरी बनी हुई है।

आपकी वाक्शक्ति भी विलक्षण है। बोलने में नएपन की खोज आपकी प्रकृति है।

विलक्षण है आपकी स्मृति। क्यों? कैसे? किसलिए? कब आदि जिज्ञासाओं का सहज समाधान आपके पास है।

आपकी धारणाशक्ति, धृति भी प्रबल है। 'मनोनियामिका शक्तिः धृतिः' स्व नियंत्रण की क्षमता आपकी अद्भुत है। आपके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व इन सब विभूतियों का समवाय है।

विभूतिसंपन्न साधिका के रूप में चयन दिवस के उपलक्ष्य में आपकी अभ्यर्थना कर रही हूँ।

आशीर्वर माँगती हूँ आपकी साधना की किरणें हमारे जीवन को भी आलोकित करें।

प्रज्ञापुरुष महाप्रज्ञ की महनीय कृति को नमन! नमन! नमन!

सहनशक्ति निर्जरा का सशक्त माध्यम

अहमदाबाद।

तेरापंथ भवन, प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में प्रेक्षावाहिनी, शाहीबाग व तेरापंथ सेवा समाज द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान कार्यशाला में मुनि डॉ० मदन कुमार जी ने कहा कि सहन शक्ति, निर्जरा व विकास का सशक्त माध्यम हैं यदि जीवन में सहनशक्ति का विकास करना है तो आवश्यकता इस बात की है कि प्रेक्षाध्यान जीवन की प्रयोगशाला बने।

मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान का अवदान आचार्य महाप्रज्ञ जी का विश्व शांति के लिए एक वरदान है। मंगलाचरण प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा, धर्मेन्द्र कोठारी व सज्जनराज संघवी और छितरमल मेहता किया।

अणुव्रत अमृत महोत्सव का आयोजन

मुंबई।

अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा आयोजित नशा मुक्ति कार्यक्रम डोंगरी रिमांड होम में मुनि डॉ० अभिजीत कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। प्रथम चरण में अणुव्रत समिति, मुंबई अध्यक्ष कंचन सोनी ने सभी का स्वागत किया।

इस रिमांड होम में प्रथम बार जैन मुनि का शिक्षाप्रद कार्यक्रम हुआ। मुनि अभिजीत कुमार जी ने कहा कि किसी के प्रति मन में बुरे भाव आएँ तो क्षमा का, माफी का पावर अपने साथ रखना चाहिए। क्षमा माँगना एवं क्षमा देने का प्रयास हमेशा करें। मुनि जागृत कुमार जी ने कहा कि परिस्थिति वश या मजबूरी में न चाहते हुए भी गलत कार्य करना पड़ता है, लेकिन हम जीवन में परिवर्तन लाकर सफल बन सकते हैं। दक्षिण मुंबई सभा अध्यक्ष गणपत डागलिया एवं कंठीकर सर ने विचार रखे।

दूसरा चरण बालिका सुधार गृह में नन्ही-नन्ही बालिकाओं को मुनिश्री ने परिवार में एक साथ रहने की कला बताई और संकल्प करवाया कि जीवन में कोई गलत कार्य नहीं करेंगे।

संचालन दिनेश धाकड़ ने किया। कार्यक्रम में संयोजिका भावना धाकड़, रेखा धाकड़, संयोजिका विनीता धाकड़, संगीता राठौड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण, सदस्य एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के मनोनयन दिवस पर विशेष

मनोनयन पर श्रद्धार्पण

● **साध्वी चित्रलेखा** ●

रंग-बिरंगी इस दुनिया में,
तुम सरोज बन विकसाई।
शैशव में वैराग्य क्षितिज पर,
बन सविता तुम उदियाई।।

नए तीर्थ के संचालन का,
अवसर प्रथम मिला तुमको।
अपनी स्मितप्रज्ञा के बल पर,
बाँध लिया सबके मन को।।

प्रतिभा-पौरुष-पुण्योदय से,
वर कर्तृत्व उभर आया।
देश-विदेशों की धरती पर,
गण का परचम फहराया।।

बना दिया मजबूत धरातल,
समण श्रेणी (णि) का श्रेयस्कर।
अग्रिम मंजिल पाने को फिर,
ललक उठा मानस मधुकर।।

देख अनागत स्वर्णिम तेरा,
कहा तथास्तु तुलसी ने।
दो गुरुओं के साये में तुम,
लगी विकास के पट बुनने।।

महाप्रज्ञ वाङ्मय-संपादन,
आगम-अनुशीलन-लेखन।
और व्यवस्थागत-कार्यों में,
किया समय का विनियोजन।।

महाप्रज्ञ ने किया प्रतिष्ठित,
मुख्य नियोजिका पद पर।
सफल किया विश्वास सुगुरु का,
विश्रुत हुई विभा सत्वर।।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी,
बनी रही जीवन आदर्श।
सीख प्रशासन के गुर गहरे,
सतत किया अपना उत्कर्ष।।

अगुआई करने का हुनर,
जन्मजात लेकर आई।
हर मुकाम पर मौका पाया,
बजी सुयश की शहनाई।।

पढ़ अतीत के पृष्ठ सुनहले,
महाश्रमण ने विरुदाया।
सतियों की सरताज बनाकर,
जोड़ दिया अध्याय नया।।

सफर सुहाना रहा आज तक,
नयन-युगल साक्षी भरते।
बने अनागत शुभ से शुभतम,
सपने सदा रहे फलते।।

मनोनयन की पावन बेला,
खुशियों के जलजात खिले।
रहो निरामय बनो चिरायु,
अंतर्दिल से स्वर निकले।।

टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं में,
भाव उकेरे कागज पर।
समय मिले तो कर लेना तुम,
चक्षुःपात जरा इन पर।
श्रद्धावलयित पुष्प मानकर,
स्वीकारो श्रमणी शेखरे!

साध्वीप्रमुखा गण की शान

● **साध्वी कुंथुश्री (हरियाणा)** ●

साध्वीप्रमुखा गण की शान
नव प्रभात की नवोदित किरणें उगा स्वर्ण विहान।।

सरदारशहर की पुण्य धरा पर।
गुरु महाश्रमण ने मनोनयन कर।
विश्रुतविभाजी नाम सुनाया।
खुशियों का सागर लहराया।
नाच उठा अवनि का कण-कण छाया हर्ष महान।।

सेवा ज्ञान विनय समर्पण।
गुरु इंगित में सब कुछ अर्पण।
प्रखर प्रतिभा विरल विलक्षण।
चिंतन में चातुर्य विचक्षण।
पठन-पाठन ध्यान साधना में सतत् गतिमान।।

नियमित संयमित जीवन शैली।
समय प्रबंधन कला निराली।
फौलादी संकल्प तुम्हारा।
श्रमणी गण की करे रुखाली।
वर्धापन अभिवादन करते गाएँ मधुमय गान।
सौ-सौ साधुवाद देती हैं गाएँ तब गुण गान।।

लय : कितना बदल गया इंसान---

टीपीएफ के कार्यक्रमों के आयोजन

टीपीएफ हुनर द्वारा संचालित महत्त्वाकांक्षी योजना

चेन्नई।

टीपीएफ के साथ आरसीसी मैग्नम और जीतो चेन्नई के संयुक्त तत्त्वावधान में तेरापंथ जैन विद्यालय में युवाओं को स्वरोजगार योग्य बनाने के उद्देश्य से टीपीएफ हुनर कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। अल्प चार्ज के साथ योग्य प्रतिभाओं को कम्प्यूटर ग्राफिक्स डिजाइनिंग एवं टेली एकाउंट कोर्स सिखाया जाता है। पिछले दो टैली बैच एवं एक ग्राफिक डिजाइनिंग बैच का समापन समारोह तेरापंथ जैन विद्यालय पट्टालम के प्रांगण में मनाया गया।

इस समारोह में मुख्य अतिथि गौतमचंद बोहरा, सुनील श्रीश्रीमाल, मंत्री दीपक जैन, दिनेश धोखा, टी०आर० आच्छा, अनिल लुणावत, विवेक बोथरा, सुनील बाफना ने अपनी उपस्थिति से सभी विद्यार्थियों का हौंसला बढ़ाया।

कार्यक्रम की शुरुआत अशोक लुणावत ने मंगलाचरण से हुई। इस कार्यक्रम में जॉब प्लेसमेंट के बारे में भी प्रकाश डाला।

गौतम बोहरा द्वारा एवं तेजराज आच्छा ने विद्यार्थियों को मोटिवेशन स्पीच दिया। आरसीसी मैग्नम के अध्यक्ष सुनील श्रीश्रीमाल ने हुनर प्रोजेक्ट पर अपने विचार व्यक्त किए। इस बैच के संभागी सभी ३४ विद्यार्थियों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथियों का सम्मान टीपीएफ हुनर द्वारा किया गया। विवेक बोथरा ने कार्यक्रम में सम्मिलित सभी अतिथियों, प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद देते हुए नियमित हुनर के लिए निःशुल्क विद्यालय परिसर उपलब्ध करवाने के लिए एजुकेशन एंड मेडिकल ट्रस्ट का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सुनील बाफना ने किया।

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक सत्र का आयोजन

नागपुर।

टीपीएफ, नागपुर ने कर्म के सिद्धांत पर एक आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक सत्र का आयोजन तेरापंथ भवन में किया।

समणी सत्यप्रज्ञा जी और समणी रोहिणीप्रज्ञा जी ने श्रोताओं को बताया कि कार्मिक मान्यताएँ न केवल किसी के कार्यों की वैधता बल्कि उन कार्यों में शामिल होने के लिए व्यक्तियों के नैतिक और मनोवैज्ञानिक कारणों पर भी विचार करती हैं। महाप्रज्ञ जी के अनुसार कर्म का सिद्धांत जिसे कर्मवाद कहा जाता है, संपूर्ण जैन दर्शन का आधार है।

टीपीएफ, नागपुर के अध्यक्ष सीए प्रियंक जैन ने कर्म मनोविज्ञान पर प्रकाश डाला। जिसका शाब्दिक अर्थ है–'कार्य' और अधिक व्यापक रूप से कारण और प्रभाव, क्रिया और प्रतिक्रिया के सार्वभौमिक सिद्धांत का नाम है जो सभी जीवन को नियंत्रित करता है।

सत्र के प्रमुख वक्ता राष्ट्रीय आध्यात्मिक संयोजक सीए आदित्य कोठारी थे।

प्रेक्षा फाउंडेशन के राष्ट्रीय सह-संयोजक अमित जैन, टीपीएफ वीपी डॉ० सुमिता जोगड़ और टीएमएम की पूर्व अध्यक्ष प्रेमलता सेठिया उपस्थित थे। सत्र में कर्म का सिद्धांत, मनोविज्ञान के स्वर में कर्म और विकेन्द्रीकृत आर्थिक प्रणाली पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की मेजबानी सीए रोहित कोचर ने की।

धन्यवाद ज्ञापन टीपीएफ, नागपुर के सचिव अधिवक्ता शिवली पुगलिया ने किया। इस ज्ञानोदय के लिए उन्होंने समानी का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में टीपीएफ कार्य समिति के सदस्य दीपक पुगलिया, एम०के० दुगड़, टीपीएफ नागपुर के संयुक्त सचिव मधु डागा, रत्ना जैन एवं सक्षम ने भाग लिया। कार्यक्रम में ४० से अधिक सदस्यों ने भाग लिया।

साध्वीप्रमुखा चयन दिवस पर अभ्यर्थना

अर्हम्

● **शासनश्री साध्वी प्रशमरति** ● **साध्वी अमितयशा**
● **साध्वी शांतिप्रभा** ● **साध्वी करुण्यप्रभा**

आज हमारी गण बगिया में छाई नई बहार।
आया खुश्यिों का त्योहार
महाप्रज्ञ की श्रम बूंदों से निखरा रूप अपार।।

चंदेरी अवनी बड़भागी मोदी कुल है गौरवशाली।
माता-पिता सब खुशियाँ छाई बिटिया आई किस्मतवाली।
मानो घर आँगन में बरसी खुशियों की बौछार।।

तुलसी प्रभु की कृपा सवाई पहली समणी दीक्षा पाई।
देश-विदेशों की धरती पर श्रम कर फसलें खूब उगाई।
गुरु की शुभ दृष्टि आराधी स्वप्न हुए साकार।।

श्री सरदारशहर भू पावन चयन दिवस दृश्य मनभावन।
विद वैशाखी महीना पावन भैक्षव गण में बरसा सावन।
जन्म धरा पर प्रभु ने निज चिंतन को दिया आकार।।

स्वाध्याय सुधा की मूरत प्यारी साम्य योग से खिल रही क्यारी।
चिंतन शैली है सुखकारी सीखें विनम्रता मनहारी।
क्या तेरे गुण गौरव गाएँ तुम सद्गुण भंडार।।

समता मूरत ममता मूरत भक्ति भरा उपहार समर्पण।
चयन दिवस पर भेंट करूँ मैं साँसों की हर धड़कन अर्पण।
हर चेहरे पर आज अनोखी छाई नई बहार।।

लय : कितना बदल गया संसार---

✦ *नैतिकता से होने वाले कार्यों के द्वारा समाज की व्यवस्था अच्छी चलती है, अन्यथा वह गड़बड़ा सकती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि महेंद्र कुमार जी की स्मृति सभा के आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

आगम मनीषी मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का देवलोकगमन सुनकर अच्छा नहीं लगा। क्योंकि वे तेरापंथ धर्मसंघ की संत-परंपरा में विशिष्ट थे। उनका समर्पण, उनकी विनम्रता हर किसी को अभिभूत कर देती थी। तीन-तीन गुरुओं का स्नेहिल वरदहस्त एवं कृपादृष्टि प्राप्त करने वाले मुनिश्री का जन्म मोहमाया नगरी मुंबई में हुआ। उस चकाचौंध रूप संसार के जंगल में आप भटके नहीं, बल्कि आत्म-मंगल करने हेतु तेरापंथ धर्मसंघ में नवमाधिशास्ता गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी से संयम जीवन स्वीकार कर आत्म साधना में प्रवृत्त हुए, जिसे उस समय की यूनिक घटना कहा जा सकता है।

संभवतः अंग्रेजी भाषा बोलने वाले वह संघ के प्रथम संत थे। इस भाषा के जरिए संघ प्रभावना में आप निमित्त बने, यह धर्मसंघ का सौभाग्य था। आत्मसाधना एवं गुरु इंगित की आराधना का लक्ष्य बनाकर आप सदा गतिमान रहे कभी रुके नहीं।

ज्ञान की गंभीरता, मधुरभाषिता, मिलनसारिता, निस्पृहता, अप्रमत्तता और निरहंकारिता जैसे उन्नत गुणों का समवाय आपके जीवन की निजी पहचान बनी, जिसे दुर्लभतम कहा जा सकता है।

आज मुनिश्री हमारे बीच नहीं रहे, फिर भी उनका निश्छल व्यवहार, सरलभाषिता हर किसी के दिल में अवश्य अंकित रहेगी। उनके कार्य, उनके द्वारा प्रदत्त संदेश और उनकी श्रमशीलता हर किसी को प्रेरणा देती रहेगी। मुनिश्री के आध्यात्मिक जीवन के प्रति शुभकामना, मंगलभावना।

सिटीलाइट, सूरत

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, आगम मनीषी मुनि महेंद्र कुमार जी की स्मृति सभा का आयोजन हुआ।

मुनि उदित कुमार जी ने मुनिप्रवर के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ जयवंता शासन है। यहाँ अनेकानेक पंडित, बहुश्रुत, चर्चावादी संत-सतियाँ हुए हैं। मुनि महेंद्र कुमार जी इसी कोटि के विरल मुनि प्रवर थे। उनका तत्त्वज्ञान गंभीर था, विज्ञान की उन्हें विशद् अवगति थी। अनेक भाषाओं पर आपकी गहरी पकड़ थी।

मंत्री मुनि सुमेरमल जी स्वामी के साथ आपका आत्मीय संबंध था। व्यक्तित्व रूप से मुझ पर भी मुनिश्री का विशेष कृपा भाव था। मुनिश्री की आत्मा वीतरागता को यथाशीघ्र प्राप्त करे, मंगलकामना।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने मुनि महेंद्र कुमार जी की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुनि अनंत कुमार जी, मुनि भव्य कुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी ने अपने भाव व्यक्त किए।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नरपत कोचर ने आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया। तेमम की अध्यक्ष राखी बैद, मुनि अजीत कुमार जी के संसारपक्षीय भाई धर्मचंद श्यामसुखा ने उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के मंत्री अभिनंदन गादिया ने किया।

भीलवाड़ा

अणुव्रत साधना सदन शास्त्री नगर, भीलवाड़ा में शासनश्री मुनि हर्षलाल जी के सान्निध्य में बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, आगम मनीषी मुनि महेंद्र कुमार जी की स्मृति सभा आयोजित की गई।

शासनश्री मुनि हर्षलाल जी ने मुनिश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ नंदनवन है। यहाँ अनेकानेक महान संत-सतियाँ हुए हैं। मुनि महेंद्र कुमार जी भी एक महान ज्ञानी मुनि थे। दीक्षा से पूर्व में बीएससी ऑनर्स करके दीक्षित हुए थे। वे लगभग १६ भाषाओं के ज्ञाता थे। तेरापंथ धर्मसंघ में बहुश्रुत परिषद् के संयोजक के रूप में वे मनोनीत हुए। 'आगम मनीषी' व 'प्रेक्षा प्राध्यापक' अलंकरण से अलंकृत हुए। मुनि अभिजीत कुमार जी आदि सहवर्ती संतों ने अंत समय तक अहोभाव से मुनिश्री की सेवा का लाभ उठाया। मुनिश्री की आत्मा मोक्ष को यथाशीघ्र प्राप्त करे, मंगलकामना।

मुनि यशवंत कुमार जी ने कहा कि मुनिश्री एक महान साहित्यकार थे, अन्वेषक थे, उन्होंने अपने जीवन में अनेक साहित्य की रचना की। जैन आगमों को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया। मुनि प्रतीक कुमार जी ने कहा कि मुनि महेंद्र कुमार जी का जीवन पंचशीलों से युक्त था। निष्ठाशील, विनयशील, श्रमशील, अनुशासनशील, सहनशील। यह पाँचों ही मुनिश्री के जीवन में दिखाई देते थे। वे एक महान बहुश्रुत संत थे।

इस अवसर पर मुनि मोक्ष कुमार जी भी उपस्थित थे। इसी क्रम में तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने भी महेंद्र मुनिश्री के जीवन पर प्रकाश डाला। टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, अभातेमम सहमंत्री नीतू ओस्तवाल, भीलवाड़ा सभा के उपाध्यक्ष शुभकरण चोरड़िया, तेमम की अध्यक्षा मीना बाबेल, तेयुप के अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, टीपीएफ के अध्यक्ष करणसिंह सिंघवी ने अपने विचारों के साथ मुनि महेंद्र कुमार जी के प्रति अपनी भावांजलि प्रकट की। कार्यक्रम का संचालन योगेश चंडालिया और निर्मल गोखरू ने किया।

पूर्वांचल-कोलकाता

तेरापंथ धर्मसंघ की बहुश्रुत परिषद के संयोजक, आगम मनीषी प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी की पुण्य स्मृति सभा का आयोजन मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा तुलसी धाम स्थित तोदी भवन में किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्टतम संत थे। वे प्रकृति से सरल, सहज, विनम थे। वे नैसर्गिक प्रतिभा के धनी थे। मात्र २० वर्ष की उम्र में आचार्य तुलसी के करकमलों से दीक्षित हुए थे। ग्रेजुएट अवस्था में यह तेरापंथ धर्मसंघ की प्रथम दीक्षा थी। उन्होंने जैन आगमों के अतिरिक्त अन्य दर्शनों का भी गहनतम अध्ययन किया।

वे आध्यात्मिक व वैज्ञानिक व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान का भी तलस्पर्शी अध्ययन किया। उनकी प्रवचन शैली, समणने की कला व कार्य कुशलता विशेष थी। वे विनोदी स्वभाव के धनी थे। मुनिश्री ने कहा कि वे ज्ञानी संत थे। साधुचर्या में भी सहज थे। मुनिश्री विविध विशेषताओं के संगम थे।

मुनि परमानंद जी ने कहा कि मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट संत थे। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के मुख्य ट्रस्टी सुरेश गोयल, स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हनुमानमल दुगड़, अभातेमम से रमण पटावरी, जैन दर्शन समिति के मंत्री सुशील चोरड़िया, तेरापंथी सभा-कोलकाता से बुद्धमल लुणिया सहित अनेक पदाधिकारीगण, सदस्य एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे। आभार ज्ञापन बालचंद्र दुगड़ ने किया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

सभाओं की सार-संभाल

नोखा।

संस्था शिरोमणी, तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, महामंत्री विनोद बैद, शाखा प्रभारी भेरूदान सेठिया के नोखा पदार्पण पर अभिनंदन किया गया। सभाध्यक्ष निर्मल भूरा ने स्वागत करते हुए नोखा सभा की गतिविधियों की जानकारी दी।

मनसुखलाल सेठिया ने कहा कि शिक्षा, चिकित्सा, सहयोग से तेरापंथी परिवार वंचित न रहे। संपूर्ण भारतवर्ष में ६५० सभाओं की सार-संभाल दौरा कर रहे अध्यक्ष महोदय ने हर प्रकार की मदद सहयोग प्रदान करने की बात कही।

महामंत्री विनोद बैद ने नोखा, सभा की विशिष्ट सभा संबोधन करते हुए अनुशासन, मर्यादा, संगठन, संघीय कार्यों में सदा जागरूक रहने को कहा। बहुश्रुत साध्वी राजीमती जी का लंबे समय से नोखा विराजना गौरवशाली-अहोभाग्य बताया।

शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने महासभा को माँ व संस्था शिरोमणी आचार्यों द्वारा प्राप्त संबोधन हर्ष का विषय बताया। कार्यों के प्रति संतुस्टि भाव रखे। मंगलपाठ सुनाया। आभार मंत्री लाभचंद छाजेड़ ने किया।

✦ *व्यवहार में अहिंसा का भाव हो तो विश्वशांति व भ्रातृत्व भावना साकार हो सकती है। अभाव, अज्ञान व आवेश हिंसा के कारण है। इनका निवारण होने पर मानव मन में अहिंसा अवतरित हो सकती है।*

✦ *गृही जीवन में भी उच्च साधना हो सकती है। गृहस्थ को अपनी क्षमता के अनुसार प्रयास अवश्य करते रहना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि महेंद्र कुमार जी के प्रति उद्गार

अर्हम्

● **नचिकेता मुनि आदित्य कुमार** ●

सुख-सौभाग्य खिला, संयम, श्रतु के द्वारा।
चिन्मय दीप जला संत महेंद्र तुम्हारा।।

सहज नम्रता मृदुता मनहर, वर-व्यवहार कुशलता।
अनुशासित, शालीन निहारी बहुमुखीय विद्वत्ता।।

आगम संपादन से जोड़ा तुमने गहरा नाता।
जो जिज्ञासु सम्मुख आता, अपना उत्तर पाता।।

प्रोफेसर प्रेक्षा प्राध्यापक आगमज्ञ अवधानी।
बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, बहुभाषी-व्याख्यानी।।

सहयोगी संतों ने पाया सेवा का शुभ अवसर।
बहुश्रुतज्ञ पथ पर बढ़ पाए, उनसे ज्ञानार्जन कर।।

तुलसी-महाप्रज्ञ के हाथों, नवनिर्माण तुम्हारा।
महाश्रमण द्वारा सम्मानित, गण ने तुम्हें निहारा।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का महाप्रयाण दिवस

मुलुंड।

तेरापंथ धर्मसंध के दशम् आचार्य प्रज्ञा पुरुष, राष्ट्रसंत महाप्रज्ञजी का चौदहवाँ महाप्रयाण दिवस तेरापंथ भवन, मुलुंड में साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी ने कई अवदान हमें दिए हैं, जैसे–प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, योग साधना आदि कई अवदान जिनके माध्यम से आज लाखों लोग खुशहाली का जीवन जी रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ जी के आभावलय में आने वाला हर व्यक्ति परम शांति का अनुभव करता है।

साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी ने अपने विचार और गीत द्वारा प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ निर्मला सिंघवी के महाप्रज्ञ अष्टकम् से हुआ। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ० रेणुकाबेन पोरवाल ने इस अवसर पर कहा कि जैन आगमों का प्राकृत, संस्कृत से सरल हिंदी भाषा में परिभाषित जो कार्य आप द्वारा हुआ है, वह अनमोल है। प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान मानव जाति के लिए अवदान हैं।

इस अवसर पर वर्षीतप आराधकों का सम्मान किया गया। जिसमें आराधक भीकमचंद सिंघवी, पिस्ता देवी हिरण, ललिता लोढ़ा, भारती देवी सांखला आदि का सम्मान किया गया। डॉ० रिया लोढ़ा व ललिता छाजेड़ का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा मंत्री संजय सिंघवी, प्रकाश गेलड़ा, महेंद्र सांखला, भगवती सिंघवी, उत्तम पीपाड़ा, कमलेश चोरड़िया, महिला मंडल संयोजिका अलका डांगी, सह-संयोजिका सुनीता सिंघवी, प्रिया संचेती आदि का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संयोजन निवर्तमान अध्यक्ष राकेश टुकलिया ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के महाप्रयाण दिवस के कार्यक्रम

रोहिणी, दिल्ली

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस चार चरणों—जपांजलि, ज्ञानांजलि, पतांजलि और श्रद्धांजलि के रूप में मनाया गया।

सैकड़ों लोगों के स्वर 'ॐ श्री महाप्रज्ञ गुरुवे नमः' जप अनुष्ठान से श्रद्धा प्रणत थे। ज्ञानांजलि कार्यक्रम आचार्य महाप्रज्ञ जीवन दर्शन प्रतियोगिता के द्वारा मनाया गया। इसमें सुशीला पुगलिया एवं विमला जैन ने प्रथम स्थान तथा सविता सुराणा एवं सुनीता महणोत ने प्राप्त किया। पतांजलि के अंतर्गत लगभग १५२ भाई-बहनों ने एकासन कर तप श्री चरणों में अर्पण किया। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का जीवन-दर्शन आत्मा को ईश्वर मानता हुआ प्रारंभ हुआ और आत्मा में ही विलीन हो गया।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ युगीन समस्याओं का समाधायक बनकर इस धरा पर अवतरित हुए। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसे अवदानों के द्वारा शारीरिक-मानसिक और भावनात्मक रोगों का निदान कर पूर्ण स्वस्थता प्रदान की।

साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा कि विद्वत्ता और विनम्रता का अद्भुत संयोग आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन में देखा जा सकता था। उनकी गुरुभक्ति, तीर्थंकरों के प्रति श्रद्धा अनुपमेय और बेजोड़ थी। ऐसी महान चेतना को शत-शत नमन।

साध्वी कर्तव्ययशा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ आत्मद्रष्टा, युगदृष्टा और भविष्यदृष्टा तीनों का समन्वय था। १४वें महाप्रयाण दिवस पर शत-शत श्रद्धांजलि।

इस अवसर पर रोहिणी की युवतियों द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित गीत की प्रस्तुति दी तथा आचार्य महाप्रज्ञ प्रेक्षाध्यान—एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। ज्ञानशाला के बच्चों, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विजय जैन, मंत्री राजेंद्र सिंघी, कोषाध्यक्ष पराग जैन, राजुरा राखेचा, विमला सुराणा, ममता भंसाली, कमल बैंगानी ने अपने विचारों एवं गीतों के द्वारा प्रस्तुतियाँ दी। मंगलाचरण शीतल बैंगानी, अमिता पटावरी, कुसुम खटेड़ आदि द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन इंदिरा सुराणा द्वारा किया गया।

गुलाबबाग

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १४वाँ महाप्रयाण दिवस का कार्यक्रम मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति में ग्रहण करने की क्षमता होती है। जो ग्रहण कर सकता है वही कुछ बन सकता है। उनके जीवन की विशेषता थी कि वे विनम्रता से भावित थे। गुरु के प्रति विनय, रत्नाधिक साधुओं के प्रति विनय भाव गुरु के प्रति समर्पण का। जीवनंत संदेश हमें आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के जीवन से मिलता है। शिक्षा गुरु मुनि तुलसी महान थे जिन्होंने अपनी सारी महानता शिष्य में डाल दी, उसे भी महान बना दिया। माँ महान थी जो ऐसे पुत्र को जन्म दिया। महाप्रज्ञ जी प्रज्ञा के धनी थे। अंर्तप्रज्ञा जागृत थी। उनकी सरलता सबके जीवन में आए यह मंगलकामना। हमारे संघ में कई साधु-साध्वियों ने तप में कीर्तिमान बनाया है। शांति देवी संचेती की तपस्या गतिमान रहे।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि हम उन्हें अपने गुरु के रूप में, संघ के आचार्य के रूप में याद करते हैं, लेकिन उनका व्यक्तित्व विराट था। ज्ञान के समंदर थे। उन्होंने अपने अनुभवों से समाज को बहुत कुछ दिया। उनकी योग-साधना बहुत गहरी थी। आचार्य महाप्रज्ञ जी के मार्गदर्शन ने समाज की सोई चेतना को जगाया है। शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक समस्याओं का समाधान उनके साहित्य में मिलता है। बड़े-बड़े साहित्यकार, दार्शनिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक उनके पास मार्गदर्शन लेने के लिए आते थे।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ का समर्पण बेजोड़ था। आत्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा ने उन्हें शिखरों तक पहुँचा दिया। समर्पण में शर्त नहीं होती, जहाँ शर्त होती है वहाँ समर्पण नहीं होता। जीवन विकास की दिशा में अगर आगे बढ़ना है, अपने-अपने विचारों को, जीवनशैली को सकारात्मक बनाएँ। महाप्रज्ञ साहित्य से विचारों में, आदतों में जीवन व्यवहार में सुधार अवश्य आता है।

मुनि विमलेश कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का अवदान प्रेक्षाध्यान जन-जन के लिए वरदान का काम कर रहा है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी पहले ऐसे आचार्य हुए जिनका साहित्य बड़े-बड़े साहित्यकार बहुत ही ध्यान से पढ़ते हैं। साधु-साध्वियों को साधना, शिक्षा के लिए सदैव प्रेरणा प्रदान करते रहते थे।

सभा मंत्री सुनील भंसाली व महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। कटिहार से समागत नेपाल-विहार सभा के मंत्री वीरेंद्र संचेती ने शांति संचेती के १२वें वर्षीतप के अभिनंदन पर विचार व्यक्त किए। मनोज सुराणा ने तपस्विनी का परिचय प्रस्तुत किया। गुलाबबाग सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने अभिनंदन-पत्र का वाचन किया। तेरापंथ सभा द्वारा बारहवें वर्षीतप संपन्न करने वाली शांति देवी संचेती का तपाभिनंदन किया गया। मुनिश्री ने संचेती परिवार की तप एवं सेवा भावना की मंगलकामना व्यक्त की।

नोखा

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ध्यान योगी, प्रतिभा संपन्न विलक्षण, महापुरुष योगी राज थे। गुरुकुलवास में साधना शिविर में, तत्त्वज्ञान क्लास में उनके सान्निध्य में रहने का मौका मिला। मंत्रों के जानकार थे। आध्यात्मिकता-वैज्ञानिकता के जनक थे, भक्ति, शक्ति, युक्ति संपन्न आचार्य थे। यह उद्गार शासनश्री साध्वी राजीमती जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस पर तेरापंथ भवन में व्यक्त किए।

मंगलाचरण तेममं द्वारा करते हुए अध्यक्षा मंजु बैद ने महाप्रज्ञ के प्रति श्रद्धा भाव रखे। तेयुप के गायक सुरेश बोथरा, रितिक, प्रेम, ऋषभ ने गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी कुसुमप्रभा जी, साध्वी प्रभातप्रभा जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अवदान—प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान को सर्वजन उपयोगी कल्याणकारी बताया।

ज्ञानशाला के बच्चों ने चर्चा-परिचर्चा को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया। राजकुमारी मरोठी ने संयोजन किया। शासनसेवी डॉ० प्रेमसुख मरोठी, उपाध्यक्ष सुनील बैद, उपासक अनुराग बैद, मोहनलाल बुच्चा, कवि इंदरचंद बैद, मंत्री लाभचंद छाजेड़, तेयुप मंत्री अरिहंत सुखलेचा, गोपाल लुणावत, उपासिका निर्मला सेठिया ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

'ॐ महाप्रज्ञ गुरुवे नमः' का सामुहिक जप साध्वी समताश्री जी ने करवाया। संचालन सभा मंत्री लाभचंद छाजेड़ ने किया।

अंधेरी (मुंबई)

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की १४वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन बिलाबांग स्कूल के प्रांगण में किया गया। आयोजन में साध्वी निर्वाणश्री जी एवं सहवर्ती साध्वीवृंद के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के जाप के साथ हुई।

अध्यक्ष चैनरूप दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। तत्पश्चात महाप्रज्ञ जी के जीवन पर एक लघु फिल्म का प्रक्षेपण किया गया। साध्वी योगक्षेमप्रभा जी ने गुरुदेव के साथ बिताए कुछ संस्मरणों का उल्लेख किया। साध्वीवृंद के द्वारा सुंदर गीतिका प्रस्तुत की गई।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री ललित लोढ़ा ने अपने मन के भावों के कुछ पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त किया। साध्वी निर्वाणश्री जी ने मंत्रों के प्रयोग के बारे में समझाया। अंत में मंत्री ललित लोढ़ा ने साध्वी निर्वाणश्री जी एवं साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साथ ही मंत्री ने बिलाबांग स्कूल के प्रबंधक मंडल का निःशुल्क स्थान उपलब्धता के लिए आभार व्यक्त किया। अध्यक्ष चैनरूप दुगड़ का आभार व्यक्त किया।

सेलम

तेरापंथ भवन में आयोजित आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की १४वीं पुण्यतिथि के अवसर पर साध्वी डॉ० गवेषणाश्रीजी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी आचार्यश्री तुलसी के सक्षम उत्तराधिकारी थे, जिनमें बुद्धि, प्रज्ञा, विनय व समर्पण का अद्भुत संयोग था। वे दार्शनिक, कवि, वक्ता, साहित्यकार थे। अपूर्व समर्पण व विनय ने उनको अज्ञ से प्रज्ञ, प्रज्ञ से महाप्रज्ञ बना दिया।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का व्यक्तित्व असीम और अमाप्य था। आप राष्ट्रसंत नहीं, विश्वसंत थे। वे ग्रंथ नहीं, महाग्रंथ थे। साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका से अपनी भावांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम की शुरुआत कीर्ति बोहरा के मंगलाचरण से हुई। केवलचंद बोहरा, सभामंत्री प्रवीण बोहरा, तेममं मंत्री सरिता चोपड़ा, वि ट्रस्ट चेयरमैन वीरेंद्र सेठिया ने अपने विचारों के साथ गुरुचरणों में श्रद्धांजलि अर्पित की। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने कव्वाली की विधा के साथ अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी दक्षप्रभा जी ने संचालन किया।

सिकंदराबाद

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में मासाब टैंक स्थित भगवान महावीर हॉस्पिटल के 'आचार्य महाप्रज्ञ सभागार' में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की पुण्यतिथि साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मनाई गई।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि प्रकाश, आनंद की यात्रा और शक्ति की उपासना का नाम है—आचार्य महाप्रज्ञ। उन्होंने ध्यान-साधना के माध्यम से आनंद की यात्रा की और जैन योग के पुनरुद्धारक बन गए। उन्होंने मंत्र साधना से शक्ति की आराधना की। उनकी जीवन यात्रा समर्पण और भक्ति के शिखर की यात्रा है। साध्वीश्री जी ने आचार्य महाप्रज्ञ के बाल्यावस्था के अनेक प्रेरक एवं श्रवणप्रिय प्रसंगों का परिषद् को रसपान करवाया।

साध्वीश्री जी ने अपनी समण श्रेणी में की गई अनेक विदेश यात्राओं के संस्करणों को साझा करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर अपने महान अवदानों से आज भी प्रणम्य हैं, सदैव प्रणम्य रहेंगे।

रिद्धिमा एवं नायशा सुराणा की मंगल महावीर स्तुति से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ महान संत, महान वैज्ञानिक के साथ-साथ महान योग शिष्य थे। तेममं अध्यक्षा अनिता गिड़िया ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जैन परंपरा के महान संत थे। तेयुप उपाध्यक्ष प्रमोद कुमार भंडारी, श्रावक संपत नौलखा, टीपीएफ अध्यक्ष पंज संचेती, टीपीएफ के राष्ट्रीय सदस्य मोहित बैद, तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं महावीर हॉस्पिटल के ट्रस्टी राजकुमार सुराणा, महावीर हॉस्पिटल चेयरमैन महेंद्र रांका, ट्रस्टी रमेश कुंडलिया ने श्रद्धासिक्त विचार व्यक्त किए।

साध्वी शौर्यप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का व्यक्तित्व वर्चस्वी एवं अनुपमेय गुणों का समवाय था। उनका हर रूप हमारे भीतर शक्ति संप्रेषित करने वाला है। साध्वीवृंद ने सामूहिक संगान किया। संयोजिका साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी विश्व कल्याणकारी विचार के धनी थे।

गंगाशहर

मुनि श्रेयांस कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला आयोजित हुई। सहप्रभारी चैतन्य रांका ने बताया कि प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १४वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला गंगाशहर ने जप के माध्यम से अपनी भावांजलि प्रस्तुत की। जिनमें ज्ञानशाला, गंगाशहर के २८५ से अधिक ज्ञानार्थी एवं प्रशिक्षिकाओं ने मिलकर जप किया।

मुनि श्रेयांस कुमार जी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए गीत प्रस्तुत कर कार्यक्रम की शुरुआत की। मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ तत्त्वज्ञ, आगमज्ञ, समयज्ञ और विशेषज्ञ संत थे, उनकी प्रज्ञा जागृत थी, इसलिए वो महाप्रज्ञ थे।

इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी का गंगाशहर आगमन पर तेयुप द्वारा उनका स्वागत किया गया। आचार्य महाप्रज्ञ के १५वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

तेरापंथी सभा मंत्री रतनलाल छलाणी ने अपनी भावना व्यक्त की। प्रशिक्षिका मोनिका संचेती ने तेरापंथी सभा व ज्ञानशाला परिवार के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप, गंगाशहर के देवेंद्र डागा, सह-प्रभारी चैतन्य रांका ने किया। कार्यक्रम का समापन मुनिश्री के मंगलपाठ से हुआ।

✦ *गुरु और शिष्य का एक आध्यात्मिक संबंध होता है। जो साधु-साध्वी गुरु के उपालंभ या डाँट को प्रसाद मानकर सहन करता है, वह महानता के पथ पर अग्रसर होता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 मई, 2023

✦ *जीवन-विज्ञान आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का शिक्षा जगत को दिया गया एक महान अवदान है। विद्यार्थियों में ज्ञान का विकास हो, किंतु उसके हाथ अच्छे संस्कारों का पल्लवन हो, उनका भावात्मक विकास हो।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर जयंती के विविध आयोजन

कांकरोली, राजसमंद

भगवान महावीर का २६२२वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव श्रद्धा, भक्ति और अनुरक्ति के साथ सामुहिक रूप से मनाया गया। प्रातःकाल शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर स्टेशन रोड, मुखर्जी चौराहा, रेता मोहल्ला, जे०के० से होती हुई प्रज्ञा विहार तेरापंथ भवन में तब्दील हो गई।

कार्यक्रम मुनि संजय कुमार जी, मुनि प्रकाश कुमार जी, मुनि धैर्य कुमार जी, मुनि सिद्धप्रज्ञ जी व दिगंबर परंपरा के आचार्य नयनसागर जी तथा स्थानकवासी संप्रदाय से मुनि रमेश कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया।

मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि अहिंसा सूत्र व्यवहार में दिखाई देना चाहिए। करुणा, दया का एक सूत्र आत्मसात हो जाए तो आपसी लड़ाई-झगड़े, प्राणी मात्र के प्रति अन्याय नहीं होगा। दिगंबर आचार्य नयन सागर जी ने कहा कि महावीर के सिद्धांत को मानने वाले के लिए व्यापार में हिंसा हो भी सकती है पर वह हिंसा का व्यापार नहीं कर सकता।

मुनि प्रसन्न कुमार जी ने संप्रदाय से ऊपर मानव धर्म बताया। स्थानकवासी समाज के रमेश कुमार जी ने कहा कि सत्य, अहिंसा, अस्तेय व अपरिग्रह के सिद्धांत को सबको मनाना चाहिए। भगवान महावीर के बताए रास्ते पर चलेंगे तो कभी दुखी नहीं होंगे। तेरापंथ समाज से मुनि प्रकाशजी ने नमस्कार मंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित गीत का संगान किया। मुनि धैर्य कुमार जी ने कहा कि हमें केवल कार्यक्रम में लाभ लेना और भोजन करके चले जाना यहाँ तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। कोई-न-कोई त्याग संकल्प भी करना चाहिए।

जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने अपरिग्रह के सिद्धांत पर प्रकाश डाला और कहा कि ज्यादा संग्रह करने से दुनिया में दुःख बढ़ता है। जीओ और जीने दो का सिद्धांत अपने आपमें सुखी जीने का नियम है।

चार संप्रदाय की महिला मंडलों ने सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों ने महावीर जीवन झाँकी शब्द चित्र एवं परिसंवाद प्रस्तुत किया। सूरज रातड़िया ने बताया कि कार्यक्रम में ८० वर्ष से ऊपर के वृद्धजनों का महावीर मंच की ओर से प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो देकर सम्मान किया गया। सभी अतिथियों का स्वागत किया। सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोमी ने स्वागत विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन विनोद बड़ाला व सूरज जैन ने किया।

महामंत्री पारस चंद जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर आसपास के अनेक क्षेत्रों से कुल मिलाकर २००० से अधिक श्रद्धालुजन उपस्थित थे।

सिकंदराबाद

अध्यात्म जगत के महान सूर्य अध्यात्म योगी आचार्यश्री महाश्रमण जी के आशीर्वाद से निर्मला बैद ने विकलांगों को अणुव्रत के संकल्प करवाए। महावीर जयंती के उपलक्ष्य में महावीर विकलांग केंद्र में पैर लगाए गए। उन्होंने कहा कि पैर लगने से आप चलने योग्य हो गए अतः मेहनत करके अपनी आजीविका चलाने का प्रयास करें। झूठ, चोरी, लड़ाई-झगड़ा आदि नहीं करें।

जैन सेवा संघ के अध्यक्ष योगेश, मंत्री अशोक, अनिल, माणकचंद पिपाड़ा, महावीर विकलांग केंद्र में जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा के प्रमुख समाज सेवी अमृत कुमार, मंत्री सुशील , सलाहकार बाबूलाल व अन्य उपस्थिति रही। अणुव्रत का साहित्य भेंट किया गया। अणुव्रत अमृत महोत्सव के वर्ष के बारे में जानकारी दी।

घाटकोपर

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में भगवान महावीर को श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित किया गया। तप-जप व भक्ति भावों से चरम तीर्थपति भगवान महावीर का श्रद्धाभिषेक किया गया। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर का जीवन-दर्शन जीने की प्रेरणा है। आज भी महावीर प्रासंगिक हैं, क्योंकि उनके सिद्धांत विश्व के लिए नितांत उपयोगी हैं। उन्होंने मानव जाति को तीन महान अकार दिए हैं—अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह। भगवान महावीर की अहिंसा अकर्मण्यता नहीं है।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि भगवान महावीर महान प्रेरणापुंज हैं। उनकी सहनशीलता, पापभीरूता व मातृ-पितृ भक्ति आदर्श थी। उनके आंतरिक गुणों का शतांश भी जीवन में धारण करके तो कल्याण हो जाए।

मुख्य अतिथि, घाटकोपर के आमदार राम कदम ने अपने संभाषण में महावीर कैसे बनें की सुंदर प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि हम शांति ढूँढ़ते हैं, इच्छाओं के साथ। पर जब तक इच्छाएँ रहेंगी—शांति नहीं मिलेगी।

महावीर जयंती समारोह का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के समुच्चार के साथ हुआ। घाटकोपर तेमम की संगायिका बहनों ने मंगलाचरण किया। इस अवसर पर समणी संचितप्रज्ञा जी ने प्रेरक अभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद ने भक्तिभरे स्वरों का संगान किया। तेरापंथ सभा, मुंबई के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष शांतिलाल बाफना, तेयुप अध्यक्ष राजेश सिंघवी, प्रवास व्यवस्था समिति के प्रबंधक मनोहर गोखरू, उपाध्यक्ष कुमुद कच्छारा, तेरापंथ महासभा उपाध्यक्ष अशोक तातेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

मंच संचालन रात्रि कार्यक्रम में धनपत व प्रातः सभा के मंत्री कमल कोठारी ने किया। आतिथ्य प्रायोजक मनोहर-वसंत कच्छारा व आमदार राम कदम का साहित्य से सम्मान किया गया।

स्वागत-अभिनंदन समारोह का आयोजन

ईरोड।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी का जुलूस के साथ तेरापंथ सभा भवन, ईरोड में आगमन पर स्वागत कार्यक्रम में डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि वसंत आता है तो प्रकृति मुस्कुराती है, और संत आते हैं तो संस्कृति मुस्कराती है। जो पानी सतत् प्रवाहशील होता है वह निर्मलता, पवित्रता को प्राप्त होता है, जो पानी किसी नाली या गड्ढे में रहता है वह कीचड़ का रूप धारण कर लेता है। साधु-संत निर्मल पानी की तरह होते हैं। जो पाँव-पाँव चलकर सद्उपदेश के लिए प्रवाहित रहते हैं। निर्मल प्रवाह में जो स्नान कर लेता है वो पवित्रता और शुद्धि को प्राप्त हो जाता है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि गंगा पाप का, शशि ताप का व कल्पवृक्ष संताप का हरण करता है। किंतु साधु-संत पाप, ताप और संताप तीनों का हरण कर लेते हैं।

रेणु नखत व पिंकी भंसाली के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। सभा अध्यक्ष सुरेंद्र भंडारी ने स्वागत किया। तेयुप अध्यक्ष सुभाष बैद, धर्मचंद बोथरा, हीरालाल चोपड़ा ने अपने विचार रखे। साध्वी मेरुप्रभा जी एवं साध्वी दक्षप्रभा जी ने मधुर गीत से सबको सराबोर कर दिया। उपासक प्रकाश पारख ने भी अपने विचार रखे। सभामंत्री दुलीचंद पारख ने आभार ज्ञापन किया। मंच संचालन महिला मंडल उपाध्यक्ष मंजु बोथरा ने किया।

मंगलभावना समारोह

तिरुकलीकुंड्रम।

साध्वी लावण्यश्री जी ने ४० दिन का प्रवास सानंद संपन्न कर गुरु इंगित अनुसार चेन्नई की ओर विहार किया। साध्वीश्री जी का यह प्रवास उपलब्धि भरा रहा। ज्ञान की गंगा निरंतर प्रवाहित रही। अनेकानेक कार्यक्रम का समायोजन हुआ। ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता, संघीय कार्यक्रम, तात्त्विक ज्ञान की जानकारी आदि कार्यक्रम की लंबी कतार लगा दी।

इस प्रवास के दौरान साध्वीश्री ने महाबलीपुरम में बने हुए कर्मणा जैन श्रावक की सार-संभाल हेतु पधारे। गुरुदेव की असीम अनुकंपा एवं साध्वी सिद्धांतश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी का अथक परिश्रम से ऐतिहासिक प्रवास रहा।

सभा अध्यक्ष संपतराज वरोला, अणुव्रत अध्यक्ष ताराचंद बरलोटा, महिला मंडल अध्यक्ष लताबाई बरलोटा, ज्ञानशाला संयोजक विमला दुगड़, सभा मंत्री प्रशांत दुगड़, दक्ष बोहरा, उर्मिला बरलोटा, राजू दुगड़, सारिका मरलेचा, अक्शया खाटेड़, आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। गीतिका का संगान भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन बाबूलाल खाटेड़ ने किया।

नि:शुल्क होम्योपैथी चिकित्सा व नेत्रदान जागरूकता अभियान

हैदराबाद।

जैन सेवा संघ के तत्त्वावधान में आयोजित भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के अंतर्गत तेयुप द्वारा तेरापंथ भवन, हिमायतनगर में संचालित स्थायी होम्योपैथी क्लिनिक के अंतर्गत निःशुल्क चिकित्सा शिविर व नेत्रदान जागरूकता अभियान आयोजित किया गया।

शिविर का सफलतम आयोजन करने में डॉ० सपना, संयोजक कोषाध्यक्ष राहुल गोलछा, नेत्रदान तेलंगाना प्रभारी विनय कुमार नाहटा ने परिश्रम किया। आलोक नाहटा व डॉ० मोहित सेठिया ने विशेष सहयोग दिया।

कुल ५२ लोगों ने अपना चेकअप करा औषधि प्राप्त की व १५ लोगों ने नेत्रदान संकल्प पत्र भरा।

शिविर में तेयुप परामर्शक आलोक डागा, सेवा प्रकोष्ठ प्रेम बैंगानी, आसकरण सेठिया, तेयुप पूर्व अध्यक्ष लक्ष्मीपत बैद, तेयुप अध्यक्ष विरेंद्र घोषल आदि अन्य सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

नैतिक शिक्षा से जीवन सजाएँ

तपामंडी।

श्रीमती शांतिदेवी मेमोरियल सरकारी कन्या स्कूल के विशाल प्रांगण में साध्वी कनकरेखाजी ने विद्यार्थियों को उद्बोधन देते हुए कहा कि हम अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों को स्वीकार कर अपने जीवन में नैतिक शिक्षा प्राप्त करें। सद्संस्कारों से अपने जीवन को सजाएँ-संवारें, नैतिकता, प्रामाणिकता, सत्यवादिता, सद्भावना से हम अपने ज्ञानमंदिर को पवित्र बनाएँ। अच्छे विचारों से ही व्यवहार अच्छा बनता है और अच्छे व्यवहार से ही सद्संस्कारों का जागरण होता है।

आगे आपने बालिकाओं को आह्वान करते हुए कहा कि हमारे उज्ज्वल भविष्य के लिए नशामुक्ति का अभियान स्कूलों में विशेष रूप से चला रहे हैं, जिससे हमारा पर्सेनेलिटी डावलपमेंट हो। ज्ञान के साथ राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण हो। करीब ७५० बालिकाओं ने विद्यार्थी नियमों की प्रतिज्ञा ली। सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की।

दूसरे सत्र में साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि शिक्षक वर्ग भी ज्ञानदान के साथ जुड़ा हुआ है, सभी अपने नैतिक दायित्व के साथ समाज, देश व राष्ट्र की अमूल्य धरोहर के विकास में अपनी अहं भूमिका निभाएँ। अध्यापक वर्ग भी नशामुक्त जीवन जीएँ। प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के कुछ टिप्स करवाने हेतु प्रेरित किया। साध्वी संवरविभाजी ने अपने विचार रखते हुए महाप्राण ध्वनि, दीर्घश्वास प्रेक्षा आदि प्रेक्टिकल प्रयोग करवाए।

प्रिंसिपल डिम्पीराणी ने अपने विचारों के साथ साध्वीश्री जी का स्वागत किया। मेम नेहा जैन, नीतिका ने अपने अभिभाषण के साथ खुशी जाहिर की। सर हरीश जैन व यशपाल शर्मा ने अपने भाग्य की सराहना करते हुए वक्तव्य के साथ साध्वीश्री जी का आभार प्रदर्शित किया।

जीवन में संयम, सहिष्णुता व समझदारी होना जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

उधना-सूरत, २ मई, २०२३

क्षमामूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में सहिष्णुता का महत्त्व है। एक समझ शक्ति और दूसरी सहन शक्ति होती है। समझ शक्ति का महत्त्व है। ज्ञानावरणीय कर्म का अच्छा क्षयोपशम होने से आदमी की समझ शक्ति अच्छी हो सकती है।

समझ शक्ति ठीक है तो कौन आदमी किस उद्देश्य से बात कर रहा है, इसको समझा जा सकता है। इस बात को आचार्य भिक्षु के समय घोड़े के पैर वाले प्रसंग से समझाया। समझ शक्ति के साथ में सहन शक्ति का भी विकास हो। सहन शक्ति न हो तो आदमी दुखी बन सकता है। अगर दोनों शक्तियाँ विकसित होती हैं, तो जीवन जीने का अच्छा आयाम प्राप्त हो सकता है।

भावनात्मक विकास भी बच्चों में हो। बच्चों को धार्मिक-आध्यात्मिक संस्कार मिले। किसी-किसी मौके पर न बोलना भी बढ़िया होता है। मौन रखना भी अच्छा है। महान वह होता है, जो विष को पीना जानता है, हर आने वाली साँस को जीना जानता है। दुनिया में बातों में माहिर कई मिल जाएँगे। लेकिन सम्मान वह पाता है, जो समर वेला में सीना तानता है।

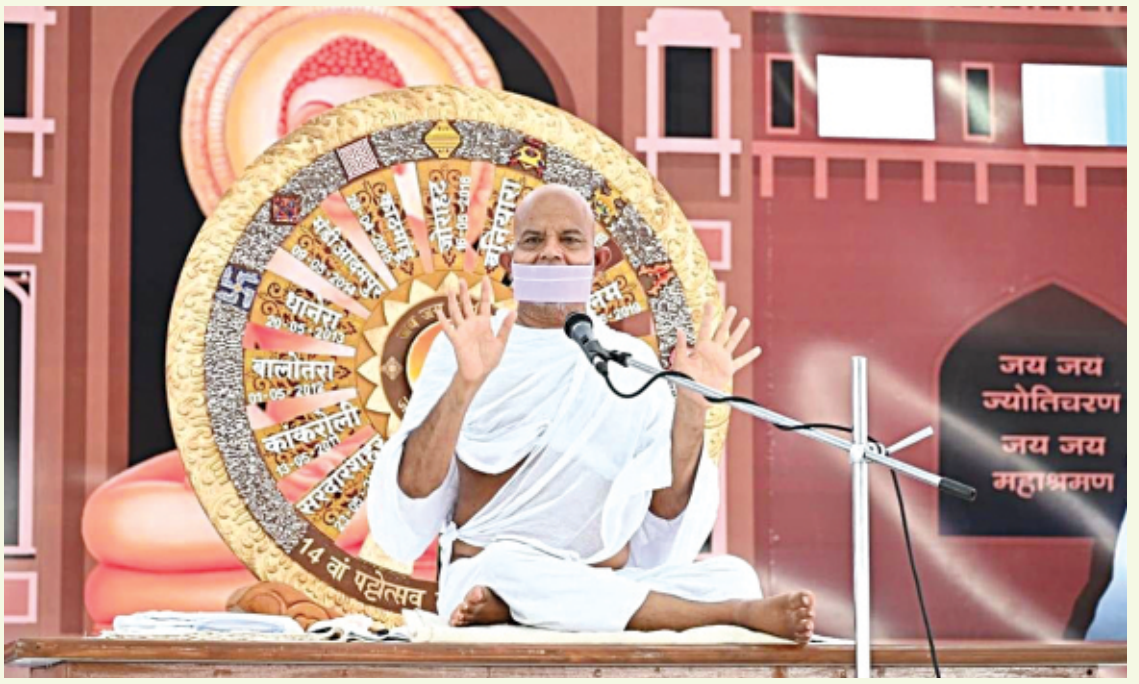

जब कलह या स्वयं की निंदा की स्थिति हो तो मौन रखें। क्षमारूपी तलवार हमारे हाथ में है, फिर दुर्जन हमारा क्या बिगाड़ सकेगा। जीवन में समता-सहनशीलता रहे। बड़ों को भी मौके पर मौन रहना चाहिए। बड़ा वह है, जिसके जीवन में बड़प्पन है, महानता है।

कई श्रावक तो साधु के माँ-बाप के समान होते हैं। कई गृहस्थ भिक्षु की अपेक्षा अधिक संयमशील भी हो सकते हैं। सहन शक्ति, समझ शक्ति और संयम शक्ति—ये तीन शक्तियाँ जीवन में होनी चाहिए। इनका जीवन में विकास हो। सहन करो सफल बनो। श्रम करो सफल बनो, संयम करो सफल बनो। संयम और गान का अमृत पीएँ। ज्ञान यथार्थ और आत्म-कल्याणकारी हो। प्राप्त ज्ञान को बाँटने का प्रयास होता रहे। ज्ञानरूपी अमृत स्वयं पीएँ और औरों को भी पिलाने का प्रयास हो।

गुरुवाणी अमृतवाणी होती है, इसे जीवन में उतारने का प्रयास करें। उधना में भी खूब धर्म की जागरणा रहे। आध्यात्मिक चेतना विकसित होती रहे।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि जो व्यक्ति तीन बातों पर ध्यान देता है, वह अमृत-पान कर सकता है—(१) पक्षपात रहित दृष्टिकोण, (२) अपने स्वरूप में लीन, (३) विकल्प जाल से मुक्ति। अमृत पान का मतलब है अच्छा जीवन जीना। व्यवहार जगत में अनासक्त रहना और अनावश्यक कल्पनाओं से दूर रहना। आचार्यप्रवर अमृत पुरुष हैं। आचार्यप्रवर की अमृत वाणी से हम जीवन को अच्छा बनाते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

समणी ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी स्वर्णप्रज्ञा जी, समणी प्रणवप्रज्ञाजी एवं समणी मानसप्रज्ञा जी ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। सभा मंत्री सुरेश चपलोत एवं धैर्य बाफना ने भी अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला द्वारा ज्ञानशाला एक्सप्रेस, किशोर मंडल द्वारा भिक्षु ने सभा बुलाई एवं कन्या मंडल ने १४ गुणस्थान पर सुंदर प्रस्तुति दी। भजन मंडल ने भी गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने अध्यात्म के दोष और गुणों के बारे में विस्तार से समझाया।

मनुष्य अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखे : आचार्यश्री महाश्रमण

सिटीलाइट, सूरत, ३ मई, २०२३

जन-जन को ज्ञान का प्रकाश प्रदान करने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सिटीलाइट तेरापंथ भवन में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर विभिन्न संदर्भों से जुड़ी हुई हो सकती है। भौतिक, अभौतिक या अलौकिक इच्छा भी आदमी में हो सकती है।

अनेक इच्छाएँ नीचे से ऊँचे स्तर की हो सकती है। यों इच्छा में परिष्कार और उज्ज्वलता भी आ सकती है। क्रमशः ये छः लेश्या के परिणाम हैं। भौतिक जगत में रहने वाला आदमी भौतिक इच्छाओं से घिरा हो सकता है। इच्छाएँ आकाश के समान अनंत होती है। जैसे आकाश की सीमा का कोई अंत नहीं होता। वैसे ही मनुष्य की इच्छाएँ भी अनंत होती हैं। इनका भी कोई अंत नहीं। एक इच्छा पूरी होने के साथ ही दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है। मनुष्य के दुःख का कारण भी इच्छाएँ होती हैं। इसलिए इच्छाओं पर नियंत्रण जरूरी है।

साधु का जीवन तो अपरिग्रही होता है। श्रावक भी अपने व्यक्तिगत जीवन में इच्छाओं का परिमाण और भोगोपभोग का परिमाण करे। त्याग-संयम की साधना से आत्मा निर्मल रह सकती है। साधु और श्रावक का पद हमारा सुरक्षित रहे। हम जैन शासन में साधना कर रहे हैं, जहाँ त्याग-संयम, तप का महत्त्व है।

हमारे धर्मसंघ में अनेक संस्थाएँ हैं, जो धार्मिक गतिविधियों से भी जुड़ी हुई हैं। आज हम उस तेरापंथ भवन में आए हैं, जहाँ आचार्य महाप्रज्ञ जी ने सन् २००३ का चतुर्मास किया था। यहाँ धर्म गुरुओं की सभा भी हुई थी। यहाँ भी धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियाँ खूब अच्छी चलती रहें। सूरत में धार्मिक जागरणा होती रहे, मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय परंपरा में जीवन मूल्यों को महत्त्व दिया गया है। वस्तु या पदार्थ को नहीं। इस परंपरा में साधुओं का महत्त्व है। भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। यहाँ अध्यात्म के मूल्य का अंकन किया जा रहा है। आचार्यप्रवर जहाँ पधारते हैं, लोगों की भीड़ वहाँ पहुँच जाती है। आचार्यप्रवर को सुनने के लिए आतुर रहते हैं। आचार्यप्रवर का आभामंडल अलौकिक, असाधारण और शांत रस के परमाणुओं से बना आभामंडल है।

यहाँ सिटीलाइट भवन में पिछला चातुर्मास करने वाले मुनि उदित कुमार जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की एवं अभिवादन-स्वागत किया। मुनि अनंत कुमार जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के दर्शन करने पहुँचे जीतो ऐपेक्स के चेयरमैन सुखलाल नाहर, जेटीएफ के चेयरमैन विनोद दुगड़ एवं अनिल बोथरा ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। कन्या मंडल व ज्ञानशाला की ओर से भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

टीटीएफ कैंप का दो दिवसीय आयोजन

जसोल।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप एवं एनडीआरएफ इंडिया टीम के संयुक्त तत्त्वावधान में नाकोड़ा रोड स्थित न्यू तेरापंथ भवन में दो दिवसीय तेरापंथ टास्क फोर्स कैंप का आयोजन हुआ।

मंत्री अमित सुराणा ने बताया कि एनडीआरएफ टीम के इंचार्ज आर०आर०एस० योगेश कुमार मीणा, सत्यनारायण पारीख, वी० मितुल कुमार, हसमुख भाई प्रजापति, नवीन भाई रेबारी, जिग्नेश कुमार चौधरी टीम सहित ने फर्स्ट ऐड, बीएलस एंड सीपीआर, सेफ टिचु इन्जुरस, चेकिंग सीबीए-बिल्डिंग कंट्रोल-शीलिंग एंड सैपलिंग विथ इंपोवर्ड एवं एमएफआर सहित विषयों पर संपूर्ण जानकारी प्रदान की। पूरे दिन में कुल तीन सत्र में कार्यक्रम आयोजित हुआ।

इससे पूर्व जैन संस्कारक पवन छाजेड़ के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से हुआ। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली ने प्रस्तुत किया। इस कैंप में जोधपुर, बालोतरा, पचपदरा, बाड़मेर, जसोल सहित क्षेत्र से कुल २६ संभागियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़, मंत्री कांतिलाल ढेलड़िया, अभातेयुप के कार्यकारिणी सदस्य मनोज ओस्तवाल, संदीप ओस्तवाल, कैलाश तातेड़, कुलदीप मारू, तेयुप सरदारशहर अध्यक्ष देवीचंद तातेड़, जोधपुर, जसोल पूर्व तेयुप अध्यक्ष प्रवीण भंसाली सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। तेयुप व किशोर मंडल सदस्यों ने अपनी सेवाएँ दी।

✦ *मन में साधु बनने की भावना भाते रहना चाहिए। भावना का परिणाम भी अच्छा आ सकता है। कोई महान भाग्योदय होता है, तब ऐसी साधना का जीवन प्राप्त होता है।*

✦ *यदि जीवन में शांति और सुख है तो धरती पर ही स्वर्ग उतर आता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 - 21 मई, 2023

✦ *आदमी गुणों के आधार पर साधु और अवगुणों के आधार पर असाधु बन जाता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य श्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव एवं "युवादिवस" की चित्रमय झलकियाँ

अभातेयुप युवावाहिनी की नई बस का हुआ उद्घाटन

पूज्यप्रवर ने महत्ती कृपा कर इस अवसर पर मंगलपाठ सुनाया

:सहयोगी:

श्रीमती विमलाबेन - श्री मनोहरलाल जी श्रीमती मधू - श्री विमल जी
चिराग, यश कटारिया
(बेमाली - बैंगलोर)

श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री हरकचंद जी - श्रीमती गुलाबदेवी की पुण्य स्मृति में
श्रीमती आशा - बी. सी. जैन भलावत, स्मिति, नैतिक जिआन
(लाछुड़ा - मुंबई)

सौ गीतादेवी सूरजमजी सूर्या
सौ शांतिदेवी नानकचंद जी तनेजा
(धुलिया)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**